Postal Regn No. C.G./RYP DN/108/2024-26

RNI NO. CHHHIN/2023/87466

लाईफ वर्सिटी

वर्ष -2 अंक- 11 माह – अप्रैल 2025 मूल्य :- ₹ 60

WWW.SCGNEWS.IN

छत्तीसगढ़ में दृष्टि के अग्रदूत

FOLLOW US :- SCGNEWS SCGNEWS.IN SCGNEWS @SCGNEWS

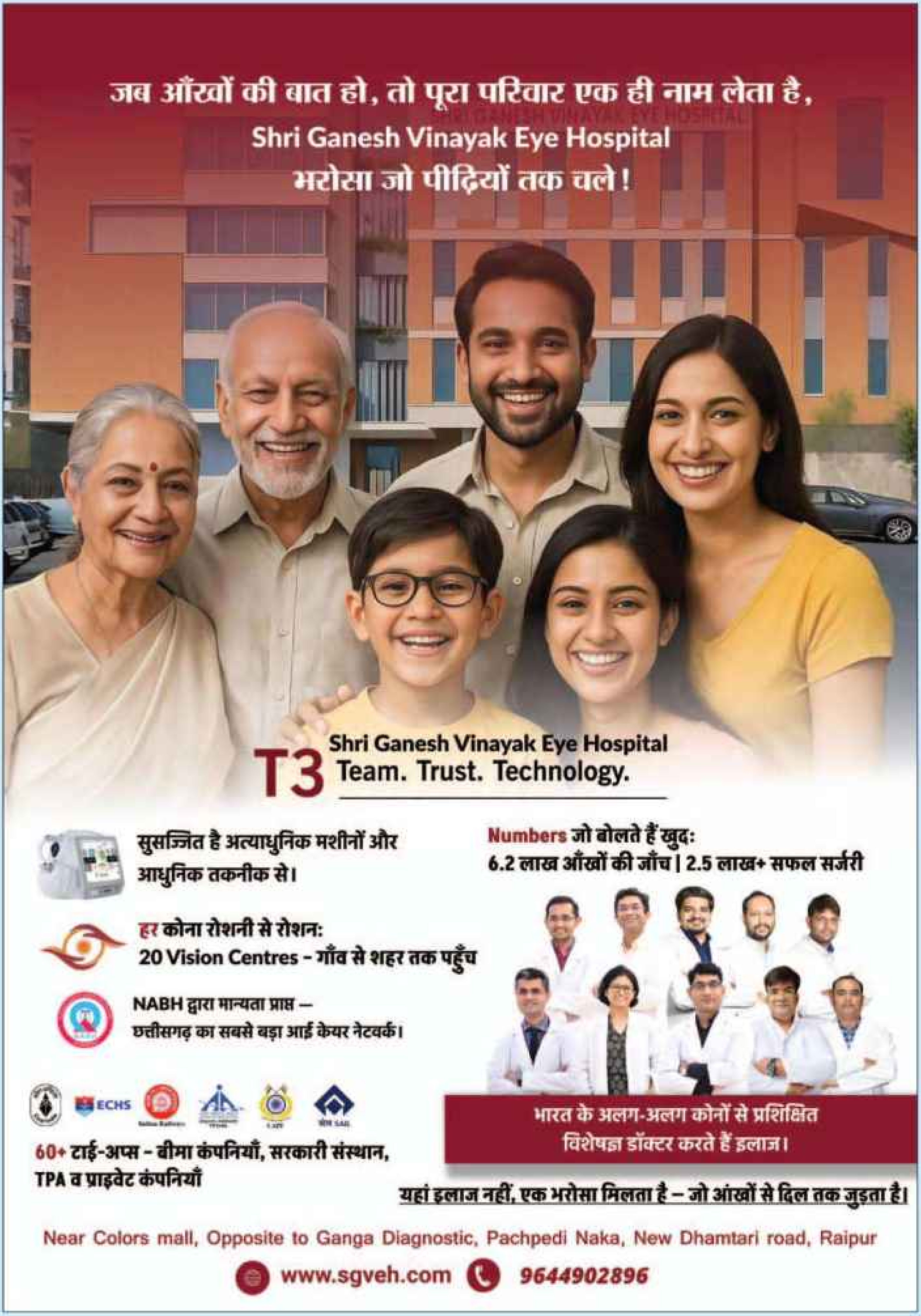
जब आँखों की बात हो, तो पूरा परिवार एक ही नाम लेता है,
Shri Ganesh Vinayak Eye Hospital
भरोसा जो पीढ़ियों तक चले!
Shri Ganesh Vinayak Eye Hospital
T3 Team. Trust. Technology.
सुसज्जित है अत्याधुनिक मशीनों और आधुनिक तकनीक से।
Numbers जो बोलते हैं खुद:
6.2 लाख आँखों की जाँच | 2.5 लाख+ सफल सर्जरी
हर कोना रोशनी से रोशन:
20 Vision Centres - गाँव से शहर तक पहुँच
NABH द्वारा मान्यता प्राप्त —
छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा आई केयर नेटवर्क।
ECHS
भारत के अलग-अलग कोनों से प्रशिक्षित
विशेषज्ञ डॉक्टर करते हैं इलाज।
60+ टाई-अप्स - बीमा कंपनियाँ, सरकारी संस्थान,
TPA व प्राइवेट कंपनियाँ
यहां इलाज नहीं, एक भरोसा मिलता है – जो आंखों से दिल तक जुड़ता है।
Near Colors mall, Opposite to Ganga Diagnostic, Pachpedi Naka, New Dhamtari road, Raipur
www.sgveh.com
9644902896

एक नई करवट लेती भारतीय राजनीति

नरेन्द्र कुमार पाण्डेय
सम्पादक

भारतीय राजनीति, अर्थव्यवस्था, न्याय व्यवस्था और धार्मिक विमर्श - चारों ही स्तंभ आज एक चौराहे पर खड़े हैं। जहाँ एक ओर सांस्कृतिक जड़ों की पुनर्प्रतिष्ठा हो रही है, वहीं दूसरी ओर लोकतंत्र के मूल प्रश्न भी पुनः पूछे जा रहे हैं। यह समय केवल विश्लेषण का नहीं, आत्मावलोकन और सक्रिय हस्तक्षेप का है।

1951 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जिस वैचारिक आंदोलन की नींव रखी थी, वह आज जनता के व्यापक समर्थन में रूपांतरित हो चुका है। 'संगठन पहले, व्यक्ति बाद में' की अवधारणा अब 'जनस्वीकृति के बिना संगठन अधूरा' की ओर बढ़ रही है। तमिलनाडु में के. अन्नामलाई जैसे नेता इस बदलाव के प्रमाण हैं - जो न केवल पार्टी के पारंपरिक ढांचे से अलग दृष्टिकोण रखते हैं, बल्कि जमीनी सच्चाईयों को आवाज़ देते हैं। भाजपा जैसे दल के लिए यह एक वैचारिक विस्तार ही नहीं, बल्कि रणनीतिक परिपक्वता का संकेत है।

छत्तीसगढ़ की औद्योगिक प्रगति भारत के समकालीन विकास मॉडल का नया अध्याय है। 1.63 लाख करोड़ का निवेश, और नवोदित औद्योगिक नीति- ये महज़ आंकड़े नहीं, बल्कि एक राज्य की आकांक्षाओं की पुनःपरिभाषा हैं। यह बताता है कि राजनीतिक नेतृत्व यदि दूरदर्शिता और दृढ़ नीतियों से युक्त हो, तो भारत का कोई भी कोना विकास का इंजन बन सकता है।

वक्फ (संशोधन) विधेयक धार्मिक संस्थानों के लिए जवाबदेही की दिशा में उठाया गया साहसी कदम है। जब सार्वजनिक जीवन का हर पक्ष समीक्षा योग्य है, तो धर्म भी उससे अछूता क्यों रहे? यह विधेयक केवल एक समुदाय की बात नहीं करता, बल्कि उन सभी धार्मिक संरचनाओं को जवाबदेह बनाता है जो भूमि, दान और विश्वास के नाम पर चलती हैं। यह विधेयक 'श्रद्धा' और 'उत्तरदायित्व' के संतुलन की माँग करता है।

उपराष्ट्रपति की हालिया टिप्पणी - जिसमें न्यायपालिका की निष्पक्षता पर चिंता जताई गई - वह केवल संवैधानिक पद की नहीं, बल्कि पूरे देश की अंतरात्मा की आवाज़ है। यदि न्याय का मंदिर भी अविश्वास का केंद्र बनने लगे, तो लोकतंत्र की नींव हिलती है। इस स्तंभ को आलोचना नहीं, आत्मचिंतन की ज़रूरत है।

22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले ने न केवल देश की सुरक्षा पर सवाल खड़े किए, बल्कि हमारी नीति-निर्माण की दिशा पर भी। यह घटना हमें याद दिलाती है कि केवल 'शांति' की बात करना काफी नहीं - 'न्याय' की ज़रूरत अब अनिवार्य हो गई है। इस देश को निंदाओं से नहीं, निर्णायक कार्यवाही से सुरक्षित किया जा सकता है। 'ज़ीरो टॉलरेंस' की नीति अब वक्त की मांग है- केवल सैन्य स्तर पर नहीं, कूटनीतिक और वैचारिक स्तर पर भी।

समय का सबसे बड़ा प्रश्न यही है -क्या हम इस बदलाव को सिर्फ एक 'घटना' की तरह देखेंगे, या इसे 'दिशा' बनाएँगे? क्या हम राजनीति, नीति, और न्याय को केवल विश्लेषित करेंगे या उन्हें गढ़ेंगे भी?

क्योंकि अब समय है - केवल सहनशीलता का नहीं, सक्रिय चेतना का।

भारत बदल रहा है - प्रश्न यह है- हम उसके साथ हैं या पीछे?

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - नरेन्द्र कुमार पाण्डेय द्वारा आसमां पब्लिशर्स इंडिया प्रा.लि. जयराम काम्पलेक्स गली, मालवीय रोड, जयस्तंभ चौक रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं 6, विकास विहार कालोनी, सांई वाटिका,जोरातालाब के पास रायपुरा, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, मो. 88171-94979
E-mail : scgnewsraipur@gmail.com | www.scgnews.in

अंदर के पृष्ठों पर

1. नक्सल छवि से नव भारत... 2
2. ....वक्फ संशोधन 5
3. नफरत नहीं, साथ चाहिए 7
4. विश्वसनीयता और जवाबदेही.. 8
5. जब अस्पताल एक 'स्थायी.. 9
6.खून के रिश्ते जब खंजर.. 10
7. नेत्र चिकित्सा के अग्रदूत 11
8. शांति की चादर में लिपटा.. 25
9. आत्मजागृति का चैत्र मास 27

SCAN & PAY

UPI ID: 329944413263914@cnrb

लाईफ वर्सिटी के प्रचार–प्रसार में सहयोग करें।

परामर्श मण्डल
■ डॉ. शुभ्रा सान्याल (नई दिल्ली)
■ डॉ. अनिल गुप्ता (रायपुर)

परिकल्पना
रजनी कान्त पाण्डेय
चंद्रभूषण/संदीप

नक्सल छवि से नव भारत की धुरी बनने को तैयार छत्तीसगढ़

नरेन्द्र पाण्डेय

'जब नीति, नीयत और नेतृत्व एक धारा में बहें, तो जमीन ही जज्बा बन जाती है और पिछड़ापन संभावनाओं में बदलने लगता है।'

— यह कथन आज छत्तीसगढ़ की औद्योगिक यात्रा पर सटीक बैठता है।

एक समय था जब छत्तीसगढ़ को देश केवल उसके नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के लिए जानता था। बस्तर की तस्वीरें, बंदूकें और लाल झंडे किसी भी निवेशक के लिए भय का कारण थीं। लेकिन आज तस्वीर बदल रही है। छत्तीसगढ़ अब 1.63 लाख करोड़ रुपये के निवेश का गंतव्य बन चुका है — और यह आंकड़ा केवल विकास का प्रतीक नहीं, विश्वास और भविष्य की गवाही है।

> **छग आज औद्योगिक निवेश और तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। वित्तीय वर्ष 2025 में, प्रोजेक्ट टूडे सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार, राज्य ने 218 नई परियोजनाओं में 1,63,749 करोड़ रुपये का निवेश आकर्षित किया, जो देश के कुल निवेश का 3.71 प्रतिशत है। यह उपलब्धि छत्तीसगढ़ को देश के शीर्ष दस निवेशक राज्यों में शामिल करती है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के दूरदर्शी नेतृत्व और नई औद्योगिक नीति 2024-30 की बदौलत, छत्तीसगढ़ अब न केवल औद्योगिक हब बन रहा है, बल्कि रोजगार सृजन और आर्थिक समृद्धि का नया केंद्र भी उभर रहा है।**

छग आज औद्योगिक निवेश और तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। वित्तीय वर्ष 2025 में, प्रोजेक्ट टूडे सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार, राज्य ने 218 नई परियोजनाओं में 1,63,749 करोड़ रुपये का निवेश आकर्षित किया, जो देश के कुल निवेश का 3.71 प्रतिशत है। यह उपलब्धि छत्तीसगढ़ को देश के शीर्ष दस निवेशक राज्यों में शामिल करती है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के दूरदर्शी नेतृत्व और नई औद्योगिक नीति 2024-30 की बदौलत, छत्तीसगढ़ अब न केवल औद्योगिक हब बन रहा है, बल्कि रोजगार सृजन और आर्थिक समृद्धि का नया केंद्र भी उभर रहा है।

औद्योगिक नीति-दस्तावेज नहीं, दृष्टिकोण है

छत्तीसगढ़ सरकार की 2024-2030 की औद्योगिक नीति एक साधारण नीति-पत्र नहीं है। यह एक सोच है — कि उद्योग केवल

लाभ के लिए नहीं, बल्कि रोजगार, सम्मान और स्वाभिमान के लिए होने चाहिए। इस नीति में ब्याज अनुदान, बिजली शुल्क छूट, स्टाम्प ड्यूटी माफी, और ट्रेनिंग इंसेंटिव जैसे प्रावधानों के साथ एक संदेश निहित है — कि छत्तीसगढ़ केवल कच्चा माल नहीं देगा, बल्कि उद्योगों के लिए सबसे सरल, स्थिर और समर्पित वातावरण भी देगा।

इस नीति का मूल मंत्र है- न्यूनतम शासन, अधिकतम प्रोत्साहन। सिंगल विंडो सिस्टम 2.0, ऑनलाइन आवेदन, और त्वरित प्रोसेसिंग जैसी सुविधाओं ने कारोबारी माहौल को पारदर्शी और तेज बनाया है। नीति में फार्मास्यूटिकल्स, आईटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ग्रीन हाइड्रोजन, सेमीकंडक्टर, और पर्यटन जैसे क्षेत्रों को विशेष प्राथमिकता दी गई है।

सेमीकंडक्टर से लेकर आईटी हब तक

छत्तीसगढ़ ने पहली बार सेमीकंडक्टर, डेटा सेंटर, और एआई आधारित उद्योगों के लिए निवेश प्रस्ताव प्राप्त किए हैं। नवा रायपुर में हाल ही में राज्य के पहले सेमीकंडक्टर प्लांट का भूमिपूजन हुआ, जो तकनीकी नवाचार की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। नवा रायपुर को बेंगलुरु और हैदराबाद की तर्ज पर आईटी हब के रूप में विकसित करने की योजना है, जिसमें नैसकॉम के साथ समझौता एक महत्वपूर्ण पहल है।

मुख्यमंत्री साय का कहना है, हमारी औद्योगिक नीति न केवल उद्योगों की स्थापना को बढ़ावा देती है, बल्कि रोजगार सृजन और आर्थिक समृद्धि पर भी जोर देती है। हमारा लक्ष्य अमृतकाल-छत्तीसगढ़ विजन 2047 के तहत विकसित भारत के निर्माण में योगदान देना है।

श्रम और श्रमिक- नीति के केंद्र में मानवता

छत्तीसगढ़ की ऊर्जाधानी कोरबा, अपने प्राकृतिक खनिज संसाधनों के कारण औद्योगिक विकास का केंद्र रहा है। यहीं के ग्राम कोहड़िया (चारपारा) में जन्मे वाणिज्य, उद्योग, और श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन ने अपने कुशल नेतृत्व से राज्य के औद्योगिक विकास को नई दिशा दी है। 1999 में कोरबा नगर निगम के पार्षद से शुरू हुआ उनका सार्वजनिक जीवन, 2004 में महापौर, 2013 में कटघोरा विधायक, और 2023 में कोरबा विधायक के रूप में निरंतर प्रगति का प्रतीक है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के मार्गदर्शन में, देवांगन ने नई औद्योगिक नीति 2024-30 को लागू कर निवेशकों का भरोसा जीता और रोजगार सृजन को गति दी।

छत्तीसगढ़ के उद्योग एवं श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन का दृष्टिकोण सामान्य नहीं है। वे जानते हैं कि औद्योगिक विकास तभी

निवेशकों का भरोसा, विकास का आधार

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की पहल पर दिल्ली, मुंबई, और बेंगलुरु में आयोजित इन्वेस्टर्स कनेक्ट मीट ने छत्तीसगढ़ की औद्योगिक क्षमता को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित किया। इन्वेस्टर्स मीट केवल चकाचौंध के मंच नहीं थे — ये संवाद और सुनवाई के सशक्त माध्यम थे। इन बैठकों में राज्य सरकार ने केवल अपना रोडमैप नहीं रखा, बल्कि निवेशकों की शंकाओं को सुना, उनकी जरूरतों को समझा और राज्य की लचीलापन वाली प्रशासनिक मशीनरी को प्रस्तुत किया। इन समिट्स में देश-विदेश के प्रमुख उद्योगपतियों ने हिस्सा लिया, जिसके परिणामस्वरूप 4.4 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए।

इसका परिणाम स्पष्ट है — 4.4 लाख करोड़ रुपये के प्रस्ताव, जिनमें से 1.63 लाख करोड़ के रूह क्रियान्वयन की स्थिति में हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा, एआई, एथेनॉल और रिन्यूएबल एनर्जी जैसे क्षेत्रों में यह निवेश छत्तीसगढ़ को नई औद्योगिक क्रांति की राह पर ला खड़ा करता है।

मुख्यमंत्री ने उद्योगपतियों को आश्वस्त किया कि छत्तीसगढ़ सरकार पारदर्शी और निवेशक-अनुकूल नीतियों के साथ हरसंभव सहयोग प्रदान करेगी। इन प्रयासों ने न केवल निवेशकों का भरोसा जीता, बल्कि छत्तीसगढ़ को तकनीकी और औद्योगिक नवाचार का केंद्र बनाने की दिशा में एक ठोस कदम उठाया।

सार्थक होगा जब उसका लाभ अंतिम श्रमिक तक पहुँचे।

इसी सोच से 500 करोड़ रुपये से अधिक की डीबीटी सहायता, श्रमिक बच्चों के लिए स्कॉलरशिप, और ऑन-साइट ट्रेनिंग सब्सिडी जैसी योजनाएं चलाई जा रही हैं। पिछले 15 महीनों में, 29,000 नए जॉब कार्ड, एक लाख आवास स्वीकृति, और 21.05 लाख आयुष्मान कार्ड जैसे कदमों ने इन क्षेत्रों में सरकार की उपस्थिति को मजबूत किया है। विशेष केंद्रीय सहायता योजना के तहत 1302 कार्य योजनाओं में से 308 पूर्ण हो चुके हैं, और 220 करोड़ रुपये के आबंटन का शत-प्रतिशत उपयोग हुआ है।

श्रमिकों के लिए ईएसआई सुविधाओं का विस्तार, स्वास्थ्य सुरक्षा और समय पर भुगतान की निगरानी जैसे छोटे-छोटे उपायों ने श्रमिकों का आत्मविश्वास लौटाया है।

यह सामाजिक न्याय का आर्थिक रूप है, जहाँ सरकार केवल संरक्षक नहीं, सहभागी है।

किसानों और श्रमिकों की समृद्धि

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की सरकार ने एक साल में किसानों के खातों में 52,000 करोड़ रुपये अंतरित किए। धान खरीदी के एक सप्ताह के भीतर भुगतान ने बाजार को गुलजार किया, और ट्रैक्टर बिक्री में रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई।

श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन के नेतृत्व में, श्रमिकों को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से 500 करोड़ रुपये डीबीटी के जरिए प्रदान किए गए। श्रम विभाग की योजनाएं श्रमिकों और उनके बच्चों को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का कहना है कि छत्तीसगढ़ की नई औद्योगिक नीति न केवल उद्योगों की स्थापना को बढ़ावा देती है, बल्कि रोजगार सृजन और आर्थिक समृद्धि पर भी जोर देती है। 'अमृतकाल-छत्तीसगढ़ विजन 2047 नवा अंजोर' के तहत, राज्य विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देगा। नक्सल प्रभावित छवि से बाहर निकलकर, छत्तीसगढ़ अब औद्योगिक और तकनीकी हब के रूप में उभर रहा है।

यहां की औद्योगिक नीति का मर्म यह नहीं कि कितने निवेश आए — बल्कि यह है कि उन निवेशों ने कितने लोगों का जीवन बदला।

डबल इंजन नहीं, ट्रिपल प्रभाव वाली सरकार

छत्तीसगढ़ में केवल केंद्र और राज्य का तालमेल नहीं दिखता, बल्कि नीति, प्रशासन और जमीनी कार्यान्वयन — इन तीनों में एक दुर्लभ समरसता दिखाई देती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 2047 विकसित भारत के विज़न में छत्तीसगढ़ अब केवल एक राज्य नहीं, एक मॉडल स्टेट बन चुका है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत 2047 के विजन को साकार करने की दिशा में छत्तीसगढ़ तेजी से अग्रसर है। ट्रिपल इंजन सरकार (केंद्र, राज्य, और स्थानीय निकाय) के सहयोग से राज्य का सर्वांगीण विकास हो रहा है। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में छत्तीसगढ़ की 6 कंपनियों की लिस्टिंग और भविष्य में और अधिक कंपनियों की भागीदारी, राज्य की बढ़ती आर्थिक ताकत का प्रतीक है।

छत्तीसगढ़ अब कहानी नहीं, उदाहरण है

जिस राज्य की पहचान कभी खनिज, कोयला और बिजली तक सीमित थी, वह अब नवाचार, श्रमशक्ति और जन-नीति के त्रिकोण पर खड़ा है। यह परिवर्तन केवल राजनैतिक इच्छाशक्ति से नहीं आया — यह जनसंवाद, योजनागत सोच और संवेदनशील प्रशासन से संभव हुआ है।

छत्तीसगढ़ अब सिर्फ नक्सल या खनिज की चर्चा से आगे निकल चुका है। यह राज्य अब भारत के आर्थिक नक्शे पर एक स्थायी और सशक्त बिंदु बन चुका है — जहाँ विकास केवल आँकड़ा नहीं, अंतर्वस्तु है। जहाँ योजनाएं केवल घोषणाएं नहीं, गाँव-गाँव की हकीकत हैं।

बस्तरः अब नक्सल नहीं, नवाचार का प्रतीक

बस्तर — वह क्षेत्र जो कभी 'रेड ज़ोन' था, अब 'ग्रीन ज़ोन' बनता जा रहा है। यहां का कायाकल्प महज सैन्य दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि समावेशी विकास की रणनीति से हो रहा है।

'नियद नेल्ला नार' जैसी योजनाएं, जो गांवों को स्वावलंबी बनाने की दिशा में काम कर रही हैं, बस्तर को केवल विकास की दौड़ में शामिल नहीं कर रही, बल्कि उसका नेतृत्वकर्ता बना रही हैं।

122 से 144 स्कूलों का विस्तार, 46 नए सुरक्षा कैंप, और 145 से अधिक गांवों में योजनाओं की पहुँच इस बात का संकेत हैं कि सरकार भय के खिलाफ भरोसे का किला खड़ा कर रही है। बस्तर संभाग के कांकेर, बस्तर, बीजापुर, सुकमा, दंतेवाड़ा, नारायणपुर, और दुर्ग संभाग के मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी में नक्सल उन्मूलन अभियान और विकास कार्यों ने सकारात्मक बदलाव लाया है।

धर्मनिरपेक्षता का नया अध्याय
वक्फ संशोधन

नरेन्द्र पाण्डेय

वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2025, भारतीय लोकतंत्र की जटिल संरचना में एक ऐसा हस्तक्षेप है, जो केवल प्रशासनिक सुधार नहीं, बल्कि सत्ता और समाज के बीच की उन अदृश्य रेखाओं को पुनर्परिभाषित करता है, जिन्हें वर्षों से धार्मिक स्वायत्तता के नाम पर छूने से बचा जाता रहा है।

यह विधेयक संसद से पारित होकर कानून बना—यह एक समाचार है। लेकिन इसके पारित होने के पीछे की रणनीति, प्रतिक्रियाएँ और सामाजिक भूगोल में इसकी गूँज—यह एक विचारधारा है। और जब विचार कानून का चोला पहन ले, तब इतिहास करवट लेता है।

निस्संदेह भारतीय प्रशासनिक और राजनीतिक इतिहास में एक मील का पत्थर है। यह विधेयक केवल वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन और पारदर्शिता को सुनिश्चित करने का प्रयास नहीं है, बल्कि इसके पीछे छिपी सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परतें इसे एक बहुआयामी घटना बनाती हैं। यह कानून केवल जमीन के दस्तावेजों को डिजिटल करने या प्रक्रियाओं को सुचारू करने तक सीमित नहीं है; यह एक विचार है—कि भारत में कोई भी संस्था, चाहे वह धार्मिक हो या गैर-धार्मिक, कानून से ऊपर नहीं हो सकती।

> **यह विधेयक केवल वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन और पारदर्शिता को सुनिश्चित करने का प्रयास नहीं है, बल्कि इसके पीछे छिपी सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परतें इसे एक बहुआयामी घटना बनाती हैं। यह कानून केवल जमीन के दस्तावेजों को डिजिटल करने या प्र॰ याओं को सुचारू करने तक सीमित नहीं है; यह एक विचार है—कि भारत में कोई भी संस्था, चाहे वह धार्मिक हो या गैर-धार्मिक, कानून से ऊपर नहीं हो सकती।**

धर्म से नहीं, व्यवस्था से प्रश्न है

वक्फ संपत्तियाँ, जो मुस्लिम समुदाय के धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए समर्पित हैं, दशकों से विवादों और भ्रष्टाचार के केंद्र में रही हैं। इन संपत्तियों पर वक्फ बोर्ड और कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों का एकछत्र नियंत्रण रहा है, जिसे कई बार 'राज्य से स्वतंत्र सत्ता' की संज्ञा दी गई।

वक्फ संपत्तियाँ कोई साधारण ज़मीन-जायदाद नहीं हैं। ये उस आस्था का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसे एक समाज ने पीढ़ियों से संरक्षित किया है। लेकिन जब यह आस्था सत्ता का दूसरा नाम बन जाए, जब ट्रस्ट की जगह ट्रस्टियों की सत्ता स्थापित हो जाए, तब व्यवस्था को हस्तक्षेप करना ही पड़ता है।

इस विधेयक का केंद्रीय तर्क यही है—कि पवित्र उद्देश्य से स्थापित संपत्तियाँ अपवित्र इरादों की शरणस्थली न बनें।

डिजिटलीकरण, पारदर्शिता, आपत्ति का अधिकार और निष्पक्ष सुनवाई—ये केवल तकनीकी शब्द नहीं हैं। ये उस मौन बहुसंख्यक मुसलमान की पुकार हैं, जिसकी संपत्ति पर किसी प्रभावशाली 'सैयद साहब' का कब्ज़ा वर्षों से वैध कहलाता रहा।

'मुस्लिम समुदाय' - एक मिथक का विघटन

इस विधेयक ने मुस्लिम समुदाय को दो स्पष्ट धड़ों में बाँट दिया है। एक ओर मुस्लिम राष्ट्रीय मंच और पसमांदा समाज जैसे समूह हैं, जो इसे गरीब और हाशिए पर पड़े मुस्लिमों के हित में मानते हैं। दूसरी ओर, अशराफ और सैयद जैसे प्रभावशाली वर्ग इसे वक्फ की स्वायत्तता पर हमला बताकर विरोध कर रहे हैं।

राजनीतिक विमर्श में 'मुस्लिम' शब्द एक समरूप समुदाय की तरह प्रस्तुत किया जाता रहा है—मानो एक स्वर, एक विचार, एक आस्था। पर यह विधेयक बताता है कि इस समुदाय में भी शोषण है, वर्ग हैं, और प्रतिरोध है।

पसमांदा समाज इस विधेयक को अपने लिए एक अवसर मानता है—एक खिड़की जो दशकों से बंद थी। वहीं अशराफ वर्ग इसे अपने विशेषाधिकारों पर चोट मानता है।

यह विभाजन बताता है कि भारत के मुस्लिम समाज को 'मतों के जोड़' से अधिक, 'विचारों के संवाद' की आवश्यकता है। भाजपा की रणनीति शायद इसी संवाद को पुनः परिभाषित करने की कोशिश है—मुसलमान बनाम भाजपा नहीं, बल्कि वंचित बनाम संरक्षक।

चुप्पी की राजनीति और शक्ति का प्रदर्शन

इस विधेयक के पारित होने की प्रक्रिया

में एक सूक्ष्म लेकिन गहरे प्रभाव वाली घटना सामने आई। विधेयक के संसदीय चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी किसी भी सदन में मौजूद नहीं थे; वह एक विदेशी दौरे पर थे। यह पहली नजर में संयोग लग सकता है, लेकिन राजनीति के जानकार इसे एक सुनियोजित कदम मानते हैं। इस महत्वपूर्ण विधेयक को पारित कराने की जिम्मेदारी गृह मंत्री अमित शाह ने संभाली, और जिस संगठनात्मक कुशलता, सहयोगी दलों के साथ तालमेल, और फ्लोर मैनेजमेंट के साथ इसे अंजाम दिया गया, वह धारा 370 को हटाने जैसी घटना की याद दिलाता है।

जिस तरह धारा 370 के समय शाह संसद में गरजे थे, उसी संगठित शांति और विधायी कौशल के साथ उन्होंने इस बार संवैधानिक वकालत की। विपक्ष तर्कों में उलझता रहा, और शाह प्रक्रिया में आगे बढ़ते रहे। यह केवल एक विधेयक नहीं, एक 'लीडरशिप स्टेटमेंट' था।

यह विधेयक न केवल कानूनी सुधार था, बल्कि एक राजनीतिक अग्निपरीक्षा भी थी। यह शायद यह तय करने के लिए आयोजित की गई थी कि मोदी के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और सरकार की कमान कौन संभालेगा। अमित शाह ने जिस तरह विपक्ष के तर्कों को खारिज किया, सहयोगी दलों का समर्थन सुनिश्चित किया, और इस प्रक्रिया को विजयी परिणाम तक पहुँचाया, वह उनकी राजनीतिक काबिलियत का प्रमाण है। बिना कुछ कहे, शायद मोदी ने इस कदम से संदेश दे दिया है कि उनकी अनुपस्थिति में भी उनकी टीम का यह 'सेनापति' स्थिति को संभाल सकता है।

इस चर्चा में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का नाम भी स्वाभाविक रूप से उभरता है। वह निस्संदेह एक कुशल प्रशासक हैं और प्रधानमंत्री पद के लिए योग्य उम्मीदवार माने जाते हैं। लेकिन मौजूदा राजनीतिक समीकरणों और शाह की संगठनात्मक मजबूती, भाजपा के भीतर उनकी पकड़, और सहयोगी दलों के साथ उनके रिश्तों को देखते हुए, शाह इस दौड़ में आगे दिखते हैं। योगी का नंबर, शायद, शाह के बाद आएगा।

आगे मंदिर, चर्च और पारदर्शिता की माँग

वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2025, भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में एक नई मिसाल कायम कर सकता है। यह दर्शाता है कि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ केवल सभी धर्मों का सम्मान नहीं, बल्कि सभी के लिए समान कानून है। यदि यह विधेयक सफलतापूर्वक लागू होता है, तो भविष्य में मंदिर ट्रस्टों, चर्च मिशनों, और अन्य धार्मिक संस्थाओं के लिए भी ऐसी ही पारदर्शिता और जवाबदेही की माँग उठ सकती है। यह विधेयक एक कानूनी सुधार से कहीं अधिक है; यह एक विचार है—कि भारत में कोई भी वर्ग, संस्था, या धर्म कानून से ऊपर नहीं हो सकता।

भारत के सामान्य नागरिक—चाहे वह हिंदू हो, मुस्लिम, सिख, या ईसाई—समान न्याय, पारदर्शी प्रशासन, और जवाबदेही की अपेक्षा रखते हैं। यही वह विचार है जो इस विधेयक को एक कानूनी दस्तावेज से बढ़कर, राष्ट्रहित में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम बनाता है।

वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2025, केवल वक्फ संपत्तियों का मामला नहीं है। यह एक रणनीति है, एक संदेश है, और शायद एक नए युग की शुरुआत है। यह विधेयक भारतीय राजनीति के भविष्य की रूपरेखा खींचता है, जहाँ पारदर्शिता, जवाबदेही, और समानता सर्वोपरि होंगे। यह प्रश्न उठता है- क्या सुधार वास्तव में असहनीय हैं, या फिर सत्ता का वर्षों से चला आ रहा एकाधिकार खतरे में है?

यदि वक्फ संपत्तियों में पारदर्शिता लाई जा सकती है, तो क्या अगला चरण मंदिर ट्रस्टों और चर्च मिशनों की जवाबदेही नहीं होगा? यह विधेयक दरअसल एक दरवाज़ा है—एक ऐसा द्वार जो भारत में धर्म और प्रशासन के संबंध को पुनर्परिभाषित करता है। यह कहता है कि धर्म का सम्मान उसके दायरे की मर्यादा में है, और मर्यादा की रक्षा कानून करता है।

यह विधेयक एक प्रश्न है-
क्या धर्म, कानून से ऊपर हो सकता है?
और इसका उत्तर है-
नहीं, धर्म तभी तक पूज्य है जब तक वह समानता और पारदर्शिता की सीमा में है। यह केवल कानून नहीं है, यह भारत के भविष्य का एक खाका है।

विपक्ष की दुविधा और सीमांचल की राजनीति

कांग्रेस और वाम दल इस विधेयक का विरोध करते हैं, लेकिन संसद में नहीं, सोशल मीडिया पर। शायद इसलिए कि वे भी जानते हैं कि इस विरोध में पूर्ण नैतिक बल नहीं है। यह उनकी रणनीतिक उलझन है–मुस्लिम हितों की रक्षा की छवि भी बचानी है और बहुसंख्यकों के 'तुष्टिकरण' के आरोप से भी।

विपक्ष की रणनीति दोहरी है। एक ओर, वह मुस्लिम वोटबैंक को यह संदेश देना चाहता है कि वह उनके हितों की रक्षा कर रहा है। दूसरी ओर, वह 'मुस्लिम तुष्टीकरण' के ठप्पे से बचने के लिए शीर्ष नेतृत्व को संसदीय चर्चा से दूर रख रहा है। कांग्रेस के शीर्ष नेता, जैसे राहुल गांधी और प्रियंका गांधी, इस मुद्दे पर संसद में सक्रिय होने के बजाय सोशल मीडिया पर बयानबाजी तक सीमित रहे। यह उनकी रणनीतिक दुविधा को दर्शाता है।

बिहार का सीमांचल क्षेत्र, जहाँ धर्म आधारित वोटिंग का इतिहास रहा है, इस विधेयक से प्रभावित होगा। लेकिन भाजपा की रणनीति द्वंद्व नहीं, संवाद पर आधारित है। वह सीमांचल के मुस्लिमों से कहती है–'यह तुम्हारे खिलाफ नहीं, तुम्हारे लिए है।' यदि यह सन्देश ज़मीन तक पहुँचा, तो यह विधेयक भाजपा को केवल कानूनी नहीं, चुनावी बढ़त भी दिला सकता है।

विपक्ष इसे भाजपा के खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहा है। लेकिन भाजपा की रणनीति साफ है- वह सीमांचल में मुस्लिम समुदाय को यह समझाने का प्रयास कर रही है कि यह विधेयक वक्फ बोर्डों के भ्रष्टाचार से उनकी मुक्ति के लिए है। साथ ही, शेष बिहार में वह यह संदेश दे रही है कि सरकार धर्म के आधार पर नहीं, बल्कि न्याय के आधार पर कानून लागू कर रही है। यदि भाजपा इस संतुलन को साध लेती है, तो वह न केवल सीमांचल में नुकसान को सीमित कर सकती है, बल्कि बिहार के अन्य हिस्सों में बढ़त हासिल कर सकती है।

नफरत नहीं, साथ चाहिए

अनामिका पाण्डेय

एक वक्त था, जब हवा में मर्दानगी की बातें गूँजती थीं। कहते थे, 'रो मत, सह ले, तू मर्द है।' और वो सहता चला गया। सीने में आग लिए, आँखों में नमी दबाए, चुपचाप चलता रहा। सहता रहा, बिना शिकवा, बिना शोर। मगर आज हवा बदल गई है। वो दुनिया, जो औरत के दुख को गाती थी, अब उसी आँगन में मर्द की सिसकियाँ गूँज रही हैं—खामोश, अनसुनी। कोई कान नहीं लगाता, कोई आँख नहीं उठाता। आज उसी मर्द की चीखें हवा में गूँज रही हैं, पर सुनने वाला कोई नहीं। चारों तरफ शोर है—औरत की तकलीफ का, समाज की कुरीतियों का—मगर इस शोर में पुरुष का दर्द कहीं खो सा गया है। क्या उसकी तकलीफ कम है? क्या उसका दिल नहीं टूटता?

अतुल सुभाष का नाम सुना होगा। जिसकी कहानी ने जैसे नींद से झकझोर दिया। एक आम आदमी, जिसने अपनी कलम से सच को कागज पर उकेरा और फिर चुपचाप चला गया। उसकी चिट्ठी पढ़ो, तो सीने में कुछ टूटता-सा लगता है। क्या वो हारा हुआ था? या हमारा समाज उसे हारने पर मजबूर कर गया? मगर वो अकेला कहाँ ? एक नौजवान, कॉलेज की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ, सपनों को बुनता हुआ, एक झूठे इल्ज़ाम में जेल की सलाखों के पीछे सड़ गया। जब सच बाहर आया, तो समाज ने कंधे झटक दिए। उसका गुनाह? शायद बस इतना कि वो गलत घड़ी में गलत जगह खड़ा था।

मेरठ का मुस्कान केस तो अभी ताजा है। सौरभ राजपूत—जिसकी पत्नी ने प्रेमी साहिल के साथ मिलकर उसकी साँसें छीन लीं। टुकड़े-टुकड़े कर शव को सीमेंट के ड्रम में ठूँस दिया। फिर दोनों हिमाचल घूमने निकल पड़े, होली खेली, हँसते-नाचते वीडियो बनाए—जैसे कुछ हुआ ही न हो। हरियाणा में एक मर्द का वजन 21 किलो घट गया, पत्नी के जुल्म से। कोर्ट में उसने अपनी कहानी सुनाई, आँसुओं से कागज भिगोए, और आखिरकार तलाक की आजादी मिली। क्या इनका कसूर ये था कि इन्होंने रिश्ते को थामने की जिद पकड़ी?

मध्य प्रदेश की एक खबर—पत्नी ने पति को कमरे में कैद कर पीटा। वो चीखता रहा, उसने सब रिकॉर्ड किया, मगर बदनामी के डर

कानून और सिस्टम इतने झुके हों कि मर्द अपनी बात कहने से पहले सौ दफा सोचे। दिमाग पर बोझ बढ़ेगा, आत्महत्याएँ बढ़ेंगी। और सबसे बड़ा खतरा—भावनाएँ दफन हो जाएँगी। जब मर्द का दर्द हँसी का सबब बने, उसकी तकलीफ कमजोरी कहलाए, तो वो कहाँ जाए? किसके आगे रोए?

से वो बाहर बोल न सका। सोचो, क्या गुनाह था उसका? प्यार करना? भरोसा करना? हर दिन अखबार,ये टीवी चैनल चीखते हैं—पत्नी की बेवफाई, पति की हत्या, झूठे रेप केस में जिंदगियाँ तबाह। कानून का दुरुपयोग एक खेल बन गया है। सच की कोई औकात नहीं रही। सोचिए अगर ये सिलसिला यूँ ही चलता रहा , तो कल क्या होगा?

शायद ऐसा समाज बने, जहाँ हर मर्द शक के घेरे में खड़ा हो। एक इल्ज़ाम उसकी साँसें छीन ले, बिना सबूत, बिना सुनवाई। बच्चे अपने बाप को विलेन समझें, क्योंकि उन्हें वही सिखाया जाए। कानून और सिस्टम इतने झुके हों कि मर्द अपनी बात कहने से पहले सौ दफा सोचे। दिमाग पर बोझ बढ़ेगा, आत्महत्याएँ बढ़ेंगी। और सबसे बड़ा खतरा—भावनाएँ दफन हो जाएँगी। जब मर्द का दर्द हँसी का सबब बने, उसकी तकलीफ कमजोरी कहलाए, तो वो कहाँ जाए? किसके आगे रोए?

दिल चीखना चाहता है—इन चीखों को भी सुनो। ये दर्द भी देखो। मर्द मशीन नहीं, हाड़-मांस का इंसान है। सीने में दिल धड़कता है, जो हर इल्ज़ाम से चूर-चूर होता है। मगर कौन सुनेगा? मीडिया, जो टीआरपी की रेस में दौड़ता है? जो सनसनी की रोटी सेंकता है? या वो लोग, जो कहते हैं, 'मर्द को क्या तकलीफ?' अगर आज न रुके, तो कल ये नफरत और गहरी होगी, जहर बन जाएगी। समाज बिखर जायेगा—न औरत बचेगी, न मर्द। रह जाएँगे बस इल्ज़ामों का ढेर और टूटा हुआ दर्द।

शायद ये नया दौर है। मगर अभी वक्त है। रुकें, सोचें। न औरत गलत, न मर्द गलत। गलत है ये नफरत, ये इल्ज़ामों का खेल। बस इतना चाहिए कि सच किसी की जिंदगी की कीमत न बने। आने वाला कल किसी और अतुल, सौरभ या नौजवान को टूटते न देखे। ये समाज एक रहे, दो टुकड़ों में न बँटे। स्त्री और पुरुष सृष्टि के दो पहिए हैं—इन्हें एक-दूसरे का साथी रहने दो, वरना ये दुनिया डगमगा जाएगी।

विश्वसनीयता और जवाबदेही पर सवाल

भारत की न्यायपालिका, जो कभी लोकतंत्र के मजबूत स्तंभों में से एक मानी जाती थी, आज अपने कुछ हालिया फैसलों और घटनाओं के कारण गंभीर सवालों के घेरे में है। ये मामले न केवल आम जनमानस को हैरान कर रहे हैं, बल्कि न्यायिक प्रणाली की विश्वसनीयता, संवेदनशीलता और नैतिकता पर भी गहरे प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं।

हर्षित पाण्डेय

भारत की न्यायपालिका, जो कभी लोकतंत्र के मजबूत स्तंभों में से एक मानी जाती थी, आज अपने कुछ हालिया फैसलों और घटनाओं के कारण गंभीर सवालों के घेरे में हैं। ये मामले न केवल आम जनमानस को हैरान कर रहे हैं, बल्कि न्यायिक प्रणाली की विश्वसनीयता, संवेदनशीलता और नैतिकता पर भी गहरे प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं। यह स्थिति चिंताजनक है, क्योंकि यह न केवल कानून की व्याख्या के संकट को दर्शाती है, बल्कि सामाजिक संवेदनशीलता और संस्थागत जवाबदेही के अभाव को भी उजागर करती है। इस लेख में तीन प्रमुख उदाहरणों के माध्यम से न्यायपालिका की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण किया गया है, साथ ही उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की हालिया टिप्पणियों को भी शामिल किया गया है, जो इस संकट को और गहरा करती हैं।

वैवाहिक बलात्कार और अप्राकृतिक यौन संबंध-एक रूढ़िवादी दृष्टिकोण

छत्तीसगढ़ हाई कोर्ट ने हाल ही में एक फैसले में कहा कि पति द्वारा पत्नी के साथ जबरन अप्राकृतिक यौन संबंध बनाना बलात्कार की श्रेणी में नहीं आता। यह फैसला भारतीय दंड संहिता (IPC) की धारा 375 के अपवाद-2 पर आधारित है, जो कहता है कि 15 साल से अधिक उम्र की पत्नी के साथ पति का यौन संबंध, चाहे वह उसकी सहमति के बिना ही क्यों न हो, बलात्कार नहीं माना जाएगा। कोर्ट ने इस तर्क को आगे बढ़ाते हुए कहा कि इसमें अप्राकृतिक कृत्य भी शामिल हैं, और पत्नी की सहमति को अप्रासंगिक करार दिया।

यह फैसला कई मायनों में चौंकाने वाला है। पहला, यह महिलाओं की यौन स्वायत्तता और शारीरिक अखंडता को पूरी तरह नजरअंदाज करता है। दूसरा, यह वैवाहिक संबंधों को एक ऐसी पवित्र संस्था के रूप में पेश करता है, जहां पत्नी की मर्जी का कोई मूल्य नहीं। आज के दौर में, जब दुनिया भर में वैवाहिक बलात्कार (मैरिटल रेप) को अपराध के रूप में मान्यता दी जा रही है, भारत की न्यायपालिका का यह रुख रूढ़िवादी और पुरातन प्रतीत होता है। यह सवाल उठता है कि क्या कानून का उद्देश्य समाज को प्रगति की ओर ले जाना नहीं होना चाहिए? सुप्रीम कोर्ट के अन्य फैसलों, जो सहमति को मौलिक अधिकारों का हिस्सा मानते हैं, के साथ यह निर्णय विरोधाभास नहीं पैदा करता?

यौन हिंसा की संकीर्ण व्याख्या

एक अन्य मामले में, कोर्ट ने फैसला दिया कि किसी लड़की के निजी अंगों को छूना और उसके पायजामे के नाड़े को खींचकर खोलने की कोशिश करना बलात्कार की कोशिश के दायरे में नहीं आता। यह निर्णय यौन अपराधों की गंभीरता को कमतर आंकने का प्रतीक है। यह समझ से परे है कि ऐसी हरकतों को यौन हिंसा की श्रेणी से बाहर कैसे रखा जा सकता है, खासकर तब जब POCSO (प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्शुअल ऑफेंसेज) जैसे कानून और IPC की धारा 354 बच्चों और महिलाओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं।

यह फैसला न केवल पीड़ितों के लिए अन्यायपूर्ण है, बल्कि समाज में एक खतरनाक संदेश भी देता है कि ऐसी हरकतें 'सामान्य' या 'क्षम्य' हैं। यह न्यायिक संवेदनशीलता की कमी को दर्शाता है, जो यौन हिंसा के मामलों में पीड़ितों के दृष्टिकोण को समझने में विफल रही। क्या यह संकेत नहीं देता कि न्यायपालिका पुरुष-प्रधान मानसिकता से पूरी तरह मुक्त नहीं हुई है?

न्यायिक भ्रष्टाचार- साख पर धब्बा

तीसरी और सबसे गंभीर घटना एक माननीय जज के सरकारी निवास से बोरे में नोटों के मिलने की खबर है। यह मामला, अगर सत्य है, तो न्यायपालिका की साख पर सबसे बड़ा धब्बा है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में आंतरिक जांच का आदेश दिया है, और संबंधित जज को दिल्ली हाई कोर्ट से उनके मूल न्यायालय, इलाहाबाद हाई कोर्ट, वापस भेज दिया गया है। यह भ्रष्टाचार का ऐसा आरोप है जो सीधे तौर पर न्यायिक प्रणाली की निष्पक्षता पर सवाल उठाता है। जब न्याय देने वाले खुद संदेह के घेरे में हों, तो आम नागरिक का भरोसा कैसे कायम

रहेगा? यह घटना केवल व्यक्तिगत विफलता नहीं, बल्कि संस्थागत पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी को भी उजागर करती है।

आत्ममंथन का समय

इन सभी मामलों में एक समानता है— न्यायिक प्रणाली का वह रवैया जो या तो पुराने कानूनों की आड़ में संवेदनशीलता से दूर भागता है या अपनी जवाबदेही को नजरअंदाज करता है। पहला और दूसरा मामला कानून की व्याख्या में संकीर्णता को दिखाता है, जो सामाजिक बदलावों और मानवाधिकारों के प्रति उदासीन है। तीसरा मामला और धनखड़ की टिप्पणियां नैतिक पतन और संस्थागत जवाबदेही की कमी की ओर इशारा करती हैं।

न्यायपालिका की विश्वसनीयता का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि वह खुद को कितना पारदर्शी, संवेदनशील और आधुनिक बनाती है। सुप्रीम कोर्ट को इन मसलों पर हस्तक्षेप करना होगा—चाहे वह वैवाहिक बलात्कार को अपराध घोषित करने की मांग हो, यौन हिंसा की परिभाषा को स्पष्ट करना हो, या न्यायिक भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त कदम उठाना हो। साथ ही, न्यायपालिका को अपनी संवैधानिक सीमाओं का सम्मान करना होगा, ताकि वह 'सुपर संसद' बनने के आरोपों से बच सके।

आज न्यायपालिका एक चौराहे पर खड़ी है। या तो वह समय के साथ कदम मिलाएगी और समाज की उम्मीदों पर खरी उतरेगी, या अपने ही फैसलों और कृत्यों के बोझ तले दब जाएगी। यह वक्त आत्ममंथन का है— क्या हमारी न्यायपालिका सचमुच 'न्याय' शब्द के मायने समझती है?

उपराष्ट्रपति की चिंता

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने हाल ही में सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले पर चिंता जताई, जिसमें राष्ट्रपति को विधेयकों पर तीन महीने में फैसला लेने का निर्देश दिया गया था। धनखड़ ने इसे संविधान के खिलाफ बताते हुए कहा कि जजों का काम केवल कानून की व्याख्या करना है, न कि राष्ट्रपति जैसे संवैधानिक पद को निर्देश देना। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ जज 'सुपर संसद' की तरह व्यवहार कर रहे हैं, जो बिना जवाबदेही के कानून बनाने और कार्यकारी कार्य करने की कोशिश कर रहे हैं।

धनखड़ ने जज के निवास से जली हुई नकदी के मामले में एफआईआर दर्ज न होने पर भी सवाल उठाया। उन्होंने पूछा कि क्या 'कानून से परे एक श्रेणी' को अभियोजन से छूट मिल गई है। उन्होंने इस मामले की जांच के लिए गठित तीन-न्यायाधीशों की समिति की कानूनी वैधता पर भी सवाल उठाया, यह कहते हुए कि इसका गठन संविधान या किसी कानून के तहत नहीं हुआ है। धनखड़ की टिप्पणियां न्यायपालिका की जवाबदेही और उसकी संवैधानिक सीमाओं पर एक गंभीर बहस को जन्म देती हैं।

जब अस्पताल एक 'स्थायी पीड़ा' बन जाए

अम्बुज अग्निहोत्री

ईलाज की परिभाषा ही बदलनी चाहिए। अब सिर्फ शारीरिक नहीं, मानसिक इलाज को भी मुख्यधारा में लाना होगा। तनाव, चिंता, और अवसाद जैसे शब्द मेडिकल रिपोर्ट में नहीं आते, लेकिन मरीज की आँखों में दिखते हैं। सवाल यह है—हम उन्हें देखना क्यों नहीं चाहते?

क्या हमारी मानसिक बीमारी को कमजोरी समझने वाली सोच? इलाज में भी मुनाफा देखना, संवेदना नहीं।

अब भी देर नहीं हुई है 'हर सिस्टम, जितना संवेदनशील होता है, उतना ही प्रभावशाली भी।'

जरूरत है, हर अस्पताल में कम से कम एक प्रशिक्षित काउंसलर की नियुक्ति, जिसका दायित्व हो सिर्फ यह पूछना—'आप अंदर से कैसे हैं?'

सरकार और समाज मिलकर इस बात को प्रचारित करें कि 'डिप्रेशन कोई दुर्बलता नहीं, एक बीमारी है—जिसका इलाज संभव है।' MBBS

'बीमारी से पहले आदमी टूटे, इससे बुरा क्या होगा?'

और नर्सिंग पाठ्यक्रमों में Holistic Health, इमोशनल इंटेलिजेंस और मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाए। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम को केवल आंकड़ों का विषय नहीं, ज़मीनी असर वाला कार्यक्रम बनाएं। बजट बढ़ाएं, दिशा तय करें, और हर अस्पताल को जवाबदेह बनाएं।

क्योंकि, मरीज की आँखें कहती हैं— 'कृपया मुझे समझिए' .. जिस मरीज की कहानी अभी आपने सुनी, वह अकेला नहीं है। हर अस्पताल के गलियारे में एक ऐसा चेहरा बैठा है—जो डॉक्टर की नहीं, इंसान की तलाश में है। अगर हम आज भी उसकी मानसिक स्थिति को अनदेखा करते हैं, तो हम एक नहीं, हजारों मरीजों को सिस्टम की 'मानवहीनता' से तोड़ते रहेंगे।

'बीमारी से पहले आदमी टूटे, इससे बुरा क्या होगा?' अब वक्त है, जब स्वास्थ्य का मतलब सिर्फ शरीर नहीं, मन को भी मानना होगा। तभी हम कह सकेंगे—'हमारा सिस्टम इंसानों का है, मशीनों का नहीं।'

खून के रिश्ते जब खंजर बन जाएँ

क्या बेटियों को जन्म देना अब एकबार फिर अभिशाप मानने लगेगा यह समाज? क्या कन्या पूजन अब सिर्फ दिखावा रहेगा और कन्या की सुरक्षा एक राजनीतिक मुद्दा बनकर रह जाएगी? हमारी आपकी कोई जवाबदारी नहीं होगी ?

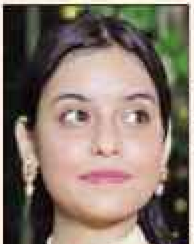

आयुषी पाण्डेय

छत्तीसगढ़ के दुर्ग से आई यह हृदय विदारक घटना न केवल एक मासूम की हत्या है, बल्कि यह हमारे सामाजिक चरित्र की चीत्कार करती हुई चिट्ठी है - जिसमें लिखा है कि अब भरोसे का वजूद खतरे में है।

6 साल की नन्हीं कली , जो कन्या भोज के लिए दादी के घर गई थी ङ्क वह लौट कर नहीं आई। और जब लौटी, तो उस मासूम की निर्जीव देह एक कार में पड़ी मिली, जो उसके अपने ही घर के अहाते में खड़ी थी। उस गाड़ी में जिस ईसान की परछाई पली-बढ़ी थी उसके साथ, वही ईसान, जो समाज की परिभाषा में 'चाचा' कहलाता है।

ये कैसा समाज बना लिया हमने?

आजकल पड़ोसी के घर का दरवाज़ा खटकाने से पहले सौ बार सोचना पड़ता है। और अब तो खून के रिश्ते भी संदेह के घेरे में खड़े हैं। भरोसे की नींव पर खड़ा यह समाज कब ऐसा हो गया, जहाँ बच्ची के आबरू की सुरक्षा केवल ईश्वर के भरोसे रह गई ?

कहते हैं, अपराधी से पहले समाज की चुप्पी गुनहगार होती है। लेकिन दुर्ग की यह घटना इस चुप्पी से कहीं आगे है , यह सामाजिक चेतना को झिंझोड़ने वाला ज्वालामुखी बन गई है। मृतक बच्ची के पिता की व्यथा में संवेदनाओं का सैलाब है ङ्क वे कह रहे हैं, 'मेरा भाई ऐसा नहीं कर सकता, वो तो बच्ची से बहुत प्यार करता था।' और यही विश्वास, इस पूरी त्रासदी की सबसे भयावह परत है।

इस जघन्य कृत्य के बाद स्थानीय लोगों का गुस्सा सड़कों पर उतर आया। एक महिला का बयान- 'मुझे रिवॉल्वर दे दो, मैं गोली मार दूँ', यह सिर्फ आक्रोश नहीं, बल्कि न्याय व्यवस्था पर से उठते भरोसे का प्रतीक है।

दुर्ग बार काउंसिल का यह निर्णय कि कोई भी वकील आरोपी का केस नहीं लड़ेगा, जनता के भावनात्मक न्याय की प्रतिध्वनि है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट के कुछ वकीलों द्वारा आरोपी का पक्ष लेने की तैयारी , यह भी संविधान की मजबूरी है, जहाँ हर आरोपी को कानूनी रक्षा का अधिकार है।

पर सवाल यह नहीं कि कौन लड़ेगा केस ङ्क सवाल यह है कि क्या हम उस मासूम की आत्मा को न्याय दिला पाएंगे ?

आज इस घटना को देखकर एक भयावह कल्पना जन्म लेती है -क्या बेटियों को जन्म देना अब एकबार फिर अभिशाप मानने लगेगा यह समाज? क्या कन्या पूजन अब सिर्फ दिखावा रहेगा और कन्या की सुरक्षा एक राजनीतिक मुद्दा बनकर रह जाएगी? हमारी आपकी कोई जवाबदारी नहीं होगी ?

एसआईटी का गठन हो गया है, फास्ट ट्रैक कोर्ट में केस चलेगा, पुलिस दावा कर रही है कि कड़ी सज़ा दिलाई जाएगी, पर इस सबके बीच, एक अबोली चीख गूंज रही है – 'मुझे बचा लेते...'

आज उस बच्ची की आत्मा हम सबसे एक प्रश्न पूछ रही है –

'क्या अब भी तुम सिर्फ मोमबत्ती जलाओगे ?'

आज ज़रूरत है उस सामाजिक पुनरावलोकन की, जहाँ हम अपने भीतर झाँक कर पूछें –

क्या हमने रिश्तों की गरिमा को खो दिया है? क्या इंसानियत अब किताबों में पढ़ाई जाएगी ?

यह वक्त है, जब हम एक नई सामाजिक चेतना की नींव रखें , जहाँ विश्वास फिर से लौटे, जहाँ बेटियाँ निर्भय होकर खिलखिला सकें, जहाँ रिश्ते संरक्षक हों, संहारक नहीं। मै और कुछ नहीं बोलूँगी आप समझदार है ..

छत्तीसगढ़ में नेत्र चिकित्सा के अग्रदूत

श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल

नेत्र—जो सिर्फ़ देखती नहीं, पहचानती हैं। हमारे डर, हमारे सपने, हमारी उम्मीदें—सब इन दो पलक झपकियों के भीतर बसते हैं। और इन्हीं आंखों की भाषा को समझने वाले थे वो विशेषज्ञ, जिन्होंने चेन्नई, हैदराबाद और एम्स दिल्ली के अनुभवों को रायपुर की ज़रूरतों से जोड़ा।

2007 का वह साल केवल एक तारीख नहीं था, छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में, जहां विकास की यात्रा अभी आकार ले रही है, वह एक दृष्टि थी—जिसे चार युवा चिकित्सकों ने अपनी आंखों में नहीं, अपने विश्वास में देखा था। छत्तीसगढ़ की धूप में जब विकास की किरणें चमक रही थीं, तब रायपुर की धरती पर श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल नाम की एक नई रोशनी फूटी। यह केवल एक अस्पताल नहीं था, यह उस सोच का नाम था—जहां आंखों का इलाज महज़ चिकित्सा नहीं, एक संवेदना बन जाता है। चार युवा चिकित्सकों द्वारा रखी गई इस नींव ने यह साबित कर दिया कि बड़े बदलावों के लिए बड़े बजट नहीं, बल्कि बड़ा दृष्टिकोण चाहिए होता है। राजधानी रायपुर से शुरू हुई यह पहल अब एक प्रतीक बन चुकी है—**Team, Trust** और **Technology** का।

यह अस्पताल उस सोच का प्रतीक है जहां टेक्नोलॉजी सिर झुकाकर सेवा करती है, और हर इलाज में झलकता है वो भारतीय भाव—सेवा ही धर्म है। छत्तीसगढ़ का पहला NABH प्रमाणन और DNB मान्यता प्राप्त यह अस्पताल इस बात के प्रमाण हैं कि गुणवत्ता और पारदर्शिता यहां केवल शब्द नहीं, आचरण हैं। यह संस्थान नज़रों में उजाला ही नहीं भरता, नज़रिया भी बदल देता है। आज जब देश के मेडिकल परिदृश्य में कॉर्पोरेट हॉस्पिटल्स और मुनाफा प्रधान संस्थानों की भरमार है, श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल एक ऐसी उम्मीद है जो हमें याद दिलाती है कि चिकित्सा—धंधा नहीं, धर्म है।

इस विशेषांक के माध्यम से, हम उस दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करेंगे जिसने इस संस्थान को केवल एक हॉस्पिटल नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की आंखों में विश्वास की चमक बना दिया है। यह कहानी है सेवा की, सपनों की, और उस उजाले की जो सिर्फ आंखों में नहीं, दिलों में उतरता है।

दो से चार हुए और रचा इतिहास

रायपुर जैसे शहर में पहले से कई अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ मौजूद थे, लेकिन चार समर्पित चिकित्सकों ने अपनी अलग पहचान बनाने का संकल्प लिया, उनका यह संकल्प आगे चलकर न केवल इन चिकित्सकों की पहचान बना । डॉ. चारुदत्त कलमकार और डॉ. सुनील मल्ल ने देवेंद्र नगर में विनायक आई हॉस्पिटल की नींव रखी, जबकि डॉ. विनय जायसवाल और डॉ. अनिल गुप्ता ने मिलेनियम प्लाजा और विवेकानन्द आश्रम रायपुर में श्री गणेश आई हॉस्पिटल की स्थापना की। वर्ष 2013 में इन चारों चिकित्सकों ने अपने अनुभव और विशेषज्ञता को एक मंच पर लाते हुए एक नई कंपनी बनाई। दो वर्ष बाद, 2015 में रायपुर के पचपेड़ी नाका के पास श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल की स्थापना हुई। इस संस्थान ने विश्वस्तरीय उपकरणों और उत्कृष्ट चिकित्सकों के साथ प्रदेश में नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांति ला दी और पूरे छत्तीसगढ़ के लिए नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित हुआ।

महानगर से गाँव तक

अस्पताल की लोकप्रियता और विश्वसनीयता के चलते वर्ष 2017 में इसका तेज़ी से विस्तार हुआ। और हॉस्पिटल के निदेशकों में सशक्त नारी शक्ति के रूप में, एक नया नाम जुड़ा–डॉ. अमृता मुखर्जी। कार्निया सर्जरी की विशेषज्ञ डॉ. अमृता के जुड़ने से हॉस्पिटल और परवान चढ़ते हुए छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों– चांपा, कोरबा, अंबिकापुर और धमतरी में अपनी शाखाएँ खोलकर इस अस्पताल ने नेत्र चिकित्सा को आम जनता के करीब लाने का कार्य किया। इसके अलावा, 15 विज़न सेंटरों के माध्यम से ग्रामीण और दूरस्थ अंचलों के लोगों को प्राथमिक नेत्र चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध कराई गईं। वर्तमान में, यह संस्थान मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और ओडिशा के सीमावर्ती क्षेत्रों तक अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहा है।

एक नया आयाम, एक नई रोशनी

- श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल का यह सफर चार चिकित्सकों के सपनों, समर्पण और उत्कृष्ट सेवाओं के कारण आज पूरे छत्तीसगढ़ के लिए गर्व का प्रतीक बन चुका है।
- आंखें अनमोल हैं, इनकी देखभाल में कोई समझौता नहीं किया जा सकता। जब बात हो आपकी दृष्टि की सुरक्षा की, तो भरोसा कीजिए विशेषज्ञों की उस टीम पर जो आपको सर्वोत्तम उपचार और विश्वास का आश्वासन देती है।
- साल 2007 में जिस संकल्प के साथ यह यात्रा शुरू हुई थी, वह आज अपनी बुलंदियों पर है। श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल एक जीवंत उदाहरण है कि जब संकल्प, सेवा और समर्पण एक साथ मिलते हैं, तो असंभव भी संभव हो जाता है।

दृष्टि नहीं, दिशा बदलने का संकल्प

Dr. Anil Gupta
Director
MBBS, MS, PhD, FFM,
Phaco Fellow
(Sankara Nethralaya,
Chennai)

डॉ. अनिल गुप्ता कहते है 2007 में एक छोटे से क्लीनिक से शुरू हुई हमारी यात्रा आज एक ऐतिहासिक मुकाम पर पहुंच चुकी है। श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल, जो कभी एक सपना था, आज छत्तीसगढ़ के रायपुर में नेत्र चिकित्सा का एक चमकता सितारा बन चुका है। हमारा विजन था कि छत्तीसगढ़ के लोगों को अपनी आंखों के इलाज के लिए राज्य से बाहर न जाना पड़े।

हम चाहते थे कि शंकर नेत्रालय चेन्नई, एलवी प्रसाद हैदराबाद, या एम्स दिल्ली जैसी विश्व स्तरीय सुविधाएं रायपुर में ही उपलब्ध हों। 2015 में हमने अपनी सफलता की पहली सीढ़ी चढ़ी, और आज हम गर्व से कह सकते हैं कि श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल तीन मजबूत स्तंभों—टीम, ट्रस्ट, और टेक्नोलॉजी—पर खड़ा है। डॉ. गुप्ता का मानना है कि इनके बिना किसी भी चिकित्सा संस्थान की नींव मजबूत नहीं हो सकती। आज हमारे पास देश के प्रतिष्ठित संस्थानों से प्रशिक्षित चिकित्सकों की टीम और विश्व स्तरीय तकनीक है, जो मरीजों को सर्वोत्तम नेत्र चिकित्सा सेवाएं प्रदान करती है।

अब हम एक बड़े सपने को साकार करने जा रहे हैं—श्री गणेश विनायको आई हॉस्पिटल 2.0। यह अपग्रेडेड हॉस्पिटल प्राइवेट और चैरिटी मरीजों के लिए अलग-अलग इमारतों में सेवाएं प्रदान करेगा। प्राइवेट विंग में भी अब वे सभी हाई-एंड सुविधाएं उपलब्ध होंगी, जिनके लिए लोग विदेश या बड़े शहरों का रुख करते थे।

जहां प्राइवेट और चैरिटी, दोनों विंग अलग-अलग होंगी—लेकिन सम्मान और सेवा, हर किसी के लिए एक समान। ओसिटी एंजियोग्राफी से डायबिटिक मरीजों की एंजियोग्राफी अब बिना सुई, बिना डाई के। वर्ल्ड क्लास एल्कोन फेको मशीन द्वारा ऑपरेशन—बिना इंजेक्शन, बिना पट्टी,बिना टाँके ; सिर्फ एक सहज, सुरक्षित सर्जरी एवं प्रीमियम आइओएल के साथ एडवांस फेको से ऑपरेशन की सुविधा ।

चैरिटी नहीं, सेवा का धर्म—

हमारी शुरुआत से ही चैरिटी हमारी प्राथमिकता रही है। पहले हम दिन में एक मरीज का मुफ्त ऑपरेशन करते थे, लेकिन आज हम प्रतिमाह लगभग 100 मुफ्त ऑपरेशन्स करते हैं। हमारी स्वयंसेवी संस्था दूरस्थ और स्लम क्षेत्रों में जाकर मरीजों की मुफ्त जांच करती है, चश्मे प्रदान करती है, और जरूरत पड़ने पर उन्हें अस्पताल लाकर ऑपरेशन की सुविधा देती है। इस दौरान उनके रहने, खाने-पीने, और वापस गांव पहुंचाने की पूरी जिम्मेदारी अस्पताल उठाता है। हमारी मोबाइल यूनिट, जो अत्याधुनिक उपकरणों से लैस है, स्लम और ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर लोगों की आंखों की जांच करती है। टेलीमेडिसिन के जरिए मरीज हमारे विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श ले सकते हैं और उचित सलाह प्राप्त कर सकते हैं।

मरीजों के लिए सम्मान

हम अपने उन मरीजों को, जो लंबे समय से हमारे साथ जुड़े हैं, एक खास प्रिविलेज कार्ड प्रदान करेंगे। इस कार्ड के माध्यम से उन्हें विशेष छूट और सुविधाएं मिलेंगी, जिससे वे हमारे परिवार का हिस्सा बन सकें।

क्योंकि हम मानते हैं—हर आंख की अपनी कहानी होती है, और हर मरीज हमारे परिवार का हिस्सा।

श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल 2.0 में हम अपने प्रोफेशनल फ्रेंडली आई केयर, पर्सनल टच इन-पॉकेट बजट के इस नारे को और मजबूती से जीवंत करेंगे। हम अपनी मूल मूल्यों से कभी समझौता नहीं करेंगे और छत्तीसगढ़ में नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे। यही हमारा वादा था, है, और रहेगा।

OUR TEAM

Glaucoma & Neuro-Ophthalmology

Dr. Charudutt Kalamkar

MS (AIIMS, N.DELHI)
MBBS (AIIMS, N.DELHI)

Dr. Anil K. Gupta

MBBS, MS, PhD, FTM
PHACO FELLOW (SANKARA NETHRALAYA CHENNAI)
DIRECTOR & CONSULTANT EYE SURGEON

Cornea/Corneal Transplant

Dr. Amrita Mukherjee

MBBS, DOMS, CORNEA CONSULTANT
(L.V PRASAD EYE INSTITUTE, HYDERABAD)

Director

Dr. Vinay Jaiswal

MBBS, MS, ICLE
(L.V PRASAD EYE INSTITUTE, HYDERABAD)

Retina & Uvea

Dr. Jayesh Patil

M.S. RETINA CONSULTANT
(SANKARA NETHRALAY CHENNAI)

Dr. Shubhank Khare

MBBS, MS, FVRS
Retina & Uvea Consultant
Aravind Eye Hospital (Coimbatore)

Oculoplasty/Orbit

Dr. Rohit Rao S

MBBS, MS, FACS
OCULOPLASTY CONSULTANT
LV PRASAD EYE INSTITUTE HYDERABAD

Pediatric Ophthalmology

Dr. Patel Bhavin

MBBS, DNB

Champa Branch Head

Dr. Mayank Dubey

MBBS, D.O.M.S

General Ophthalmology

Dr. Jagdish Kumar

MBBS, DNB

OUR NETWORK

Shri Ganesh Vinayak Eye Hospi

श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल -2.0 , यह सिर्फ ईंटों और मशीनों से
गांवों की धूल, स्लम की गलियों और आँखों की धुंध में आकार ले रहा था
को "बाज़ार" बनाया, वहीं इस संस्थान ने इसे "मिशन" रखा। फर्क बर
जाती हैं, और आँखों से पहले कहानियाँ सुनी जाती हैं। श्री गणेश विनायव
एक प्राइवेट विंग, जिसमें वे सारी अत्याधुनिक सुविधाएं मौजूद हैं, जिनके
की टिकट कटाते थे। और एक चैरिटी विंग, जो उनकी सेवा के लिए है जिन
लेकिन फर्क सिर्फ भवनों का है—सम्मान और सेवा में नहीं। आज यहां बि
बिना इंजेक्शन, बिना टांके, बिना पट्टी के फेको सर्जरी होती है। वि
संवेदनशील टीम के साथ अब यह संस्थान चिकित्सा नहीं, क्रांति कर रहा
जो स्लम में जाती है, वो श्री गणेश आई फाउंडेशन जो गांवों में चश्मे बां
जाते हैं, और वो टेलीमेडिसिन जो दूरदराज के मरीजों को विशेषज्ञता से ज
एक संवेदनशील आंदोलन है। यहां के डॉक्टर किसी को "पेशेंट" नहीं, "
मशीनें डरावनी नहीं लगतीं, और रिसेप्शन पर बैठी मुस्कान किसी कॉर्पोरे
इसीलिए, यह हॉस्पिटल हर आँख में सिर्फ रोशनी नहीं भरता, आशा भी
यूनिट के साथ एक नया अध्याय शुरू कर रहा है, तो यह सिर्फ चिकित्सा व
है। और जब भी कोई पूछे—"आँखों के इलाज के लिए इतनी बड़ी इमारत
नहीं, दृष्टिकोण देते हैं। और दृष्टिकोण बड़ा हो, तो

tal 2.0 Upgraded 2025

बना नया परिसर नहीं है, यह वह स्वप्न है जो वर्षों से
जहां देश के कई कॉर्पोरेट अस्पतालों ने नेत्र चिकित्सा
नज़रिए का है। यहां ऑपरेशन से पहले आँखें पढ़ी
क आई हॉस्पिटल 2.0 अब दो पंखों वाला पंछी है—
लिए पहले रायपुर के लोग चेन्नई,हैदराबाद या दिल्ली,
के पास आँखों का दर्द तो है, पर इलाज की जेब नहीं।
ना सुई, बिना डाई की ओसीटी एंजियोग्राफी होती है।
विश्वस्तरीय एल्कोन मशीन, प्रीमियम IOL, और एक
है। इसका सबसे बड़ा परिचय है—वो मोबाइल यूनिट
ते हैं, वो 100 से ज्यादा फ्री ऑपरेशनहर महीने किए
ोड़ता है। आज ये हॉस्पिटल सिर्फ एक संस्था नहीं—
परिवार" मानते हैं। यहां की दीवारें ठंडी नहीं लगतीं,
ट पॉलिसी की नहीं, संवेदना की होती है। और शायद
लौटाता है। आज जब यह संस्थान सुपर स्पेशलिटी
ी ऊंचाई नहीं, मानवता की गहराई को छूने का प्रयास
क्यों?" तो जवाब सिर्फ एक है—"क्योंकि हम इलाज
इमारतें भी छोटी पड़ जाती हैं।"

प्रमुख उपलब्धियाँ

- छत्तीसगढ़ का पहला NABH मान्यता प्राप्त Eye Hospital
- 20 Vision Centres – गाँव से शहर तक रोशनी
- 3 City OPDs (Raipur)
- 2 Hospital Branches – Korba & Champa
- 100+ Awards & Recognitions
- DNB मान्यता प्राप्त – Ophthalmology PG Training Center
- 200+ Eye Surgeons को Fellowship Training (भारत और विदेश से)
- 150+ Optometrists Trained
- 15+ Vision Technicians Trained
- World-class Diagnostic Machines – Phaco, Retina OCT, Laser, ICL/IPCL आदि
- 24x7 Tele-Eye Medicine सुविधा
- विशेष योग्यजनों के लिए घर-घर Eye Care (Home Services)
- Highest Ratings on Google, JustDial, Facebook, Instagram
- Doctors from renowned institutes:
  - Sankara Nethralaya, Chennai
  - LV Prasad, Hyderabad
  - AIIMS, New Delhi
  - Aravind Eye Hospital, Madurai
- II. आंकड़ों में मजबूती (Our Strength in Numbers)
- 6.2 लाख+ आँखों की जाँच
- 2.5 लाख+ सफल सर्जरी
- 300+ सफल Cornea Transplants –
  - Dr. Amrita Mukherjee के नेतृत्व मेंहजारों Motiyabind ऑपरेशन –प्रीमियम IOLs व उन्नत तकनीक के साथ विदेशी Doctors ने SGVEH में ली
  - Fellowship Training Research Presentations: Dr. Charu Dutt Kalamkar व Dr. Amrita Mukherjee द्वारा भारत के विभिन्न मेडिकल मंचों पर Clinical Papers प्रस्तुत National Blindness Control Program: Dr. Charu Dutt Kalamkar – भारत सरकार द्वारा नामित सदस्य, नेत्र चिकित्सा में योगदान ।

विश्वास की चमक

"जब कोई मरीज आंखों की पट्टी हटाते ही अपनी बेटी को पहचान लेता है... वो पल मेरी सारी थकान मिटा देता है। यही मेरी पूजा है, यही मेरी प्रेरणा।

– डॉ विनय जायसवाल"

Dr. Vinay Jaiswal
Director
MBBS,MS, ICLE
(L.V Prasad Eye Institute, Hyderabad)

छत्तीसगढ़ की मिट्टी में अगर आप गौर से देखेंगे तो सिर्फ धान नहीं, उम्मीदें भी उगती हैं। इन्हीं उम्मीदों से जन्मा एक सपना — हर आंख में रोशनी, हर दिल में भरोसा। यही सपना था श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल की नींव रखने वाले निदेशकों मे से एक डॉ. विनय का।

डॉ विनय याद करते हुए कहते है - यह कोई आम अस्पताल नहीं था। यह एक आंदोलन था — चिकित्सा को शहरों की चकाचौंध से निकालकर ज़मीन से जुड़ने का आंदोलन। एक बुजुर्ग बाबा जब दोनों आंखों में मोतियाबिंद लिए अस्पताल पहुंचे, तो शायद उन्हें खुद नहीं पता था कि वो केवल मरीज नहीं, बल्कि प्रेरणा बन जाएंगे। ऑपरेशन के बाद जब सुबह पट्टी खुली, बाबा की आंखों में जो चमक थी, वो रोशनी केवल उनकी आंखों की नहीं थी, वो एक रास्ता दिखा रही थी **— सेवा, संवेदना और समर्पण का रास्ता।**

डॉ. विनय के शब्दों में, '**पैसे की कमी से किसी की सर्जरी नहीं रुकनी चाहिए।**' यही दर्शन इस संस्थान की आत्मा बन चुका है। बीपीएल कार्ड धारक हो या निजी कमरे में इलाज करवाने वाला कोई कॉर्पोरेट अधिकारी — यहां इलाज का स्तर एक जैसा है। क्योंकि बीमारी जात-पात, वर्ग, पैसे का भेद नहीं करती — और न ही सच्ची चिकित्सा करती है। आज श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल छत्तीसगढ़ से निकलकर पूरे देश में एक भरोसे के नाम से जाना जा रहा है। खाड़ी देशों से भी लोग इलाज के लिए यहां आ रहे हैं। एक 108 वर्षीय महिला से लेकर तीन महीने के नवजात की सफल सर्जरी **— यह केवल तकनीक की नहीं, इंसानियत की जीत है।**

नई सुपर स्पेशलिटी यूनिट के साथ अब यह संस्थान एक नया अध्याय शुरू कर रहा है। एक ऐसा अध्याय जिसमें विश्वस्तरीय तकनीक, संवेदनशील टीम, और हर वर्ग के लिए समर्पित दृष्टिकोण तीनों मिलते हैं। यह सिर्फ आंखों का इलाज नहीं, यह उन सपनों की सेवा है जो अंधेरे में खो गए थे। यह सिर्फ डॉक्टरों की टीम नहीं- यह वो कारवां है जो हर चेहरे पर रोशनी लौटाने चला है। श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल की यह यात्रा बताती है — कि जब सेवा संकल्प बन जाए और चिकित्सा साधना, तब हर आंख में बसती है सिर्फ रोशनी नहीं, बल्कि एक नए जीवन की चमक।

अब दृष्टि नहीं, व्यक्तित्व भी लौटेगा

"'जब खेतों में हरियाली लहराती है, तब गाँव की आँखों में भविष्य दिखता है। पर वही बालियाँ अगर पुतलियों में चुभ जाएँ, तो यह भविष्य अंधकारमय भी हो सकता है।'"

Dr. Amrita Mukherjee
Director
MBBS, DOMS, Cornea Consultant (L.V Prasad Eye Institute, Hyderabad)

छत्तीसगढ़ - जहां मिट्टी की सोंधी खुशबू में जीवन बसता है, और धान की बालियाँ सिर्फ अन्न नहीं, आत्मा की प्रतीक हैं। मगर यही बालियाँ, जब आंखों में चली जाती हैं, तो धीरे-धीरे रोशनी को निगलने लगती हैं - बिल्कुल वैसे ही जैसे अनदेखी समस्या समाज की सामूहिक दृष्टि को कमजोर कर देती है। डॉ. अमृता मुखर्जी, जो श्री गणेश विनायक हॉस्पिटल की एकमात्र महिला कॉर्निया विशेषज्ञ हैं, कहती हैं धान की कटाई के दौरान उड़ती बालियाँ या उनके महीन कण कॉर्निया को नुकसान पहुंचाते हैं। शुरुआती दौर में न जलन होती है, न दर्द - बस एक मामूली सी चुभन। और यही 'मामूली चुभन' छत्तीसगढ़ के कई ग्रामीणों के लिए बाद में अंधकार बन जाती है। 'लोग दर्द को सह लेते हैं, पर डॉक्टर के पास नहीं जाते। और जब पहुंचते हैं, तब तक रोशनी हाथ से निकल चुकी होती है।' समस्या की जड़ में दो बातें हैं - जागरूकता की कमी और लापरवाही की परंपरा। गाँवों में अक्सर लोग दवाई को इलाज मानते हैं, डॉक्टर को नहीं। यही वजह है कि मेडिकल स्टोर्स से ली गई स्टेरॉइड युक्त बूंदें कॉर्निया को धीरे-धीरे खा जाती हैं। डॉ. अमृता साफ चेतावनी देती हैं -'बिना डॉक्टरी सलाह से ली गई दवाएं आँखों के लिए ज़हर हैं।'

3 से 17 वर्ष के बच्चों में एलर्जिक कंजक्टिवाइटिस एक सामान्य पर खतरनाक समस्या बन चुकी है।मार्च से जून तक जब धरती तपती है, तब बच्चों की आँखें भी भीतर से तपने लगती हैं जलन, खुजली, आँखों का लाल होना -ये लक्षण अब गाँवों में आम हैं, मगर अफ़सोस - इलाज की सोच अब भी दुर्लभ है। डॉ. अमृता सलाह देती हैं - 'एलर्जी में डॉक्टर बार-बार न बदलें, धैर्य रखें। यही बचाव है।'

कॉर्निया ट्रांसप्लांट- भ्रांतियों से भरी एक सच्चाई

अक्सर लोग कहते हैं -'क्या पूरी आंख बदल दी जाएगी?' सच्चाई यह है कि केवल कॉर्निया बदला जाता है, वो भी तब जब आंख की नसें सलामत हों। यह तकनीक किसी चमत्कार से कम नहीं - एक डोनर, दो लोगों को रोशनी दे सकता है। कस्टम आर्टिफिशियल आई और कॉर्निया ट्रांसप्लांट अर्थात नेत्र प्रत्यारोपण से अब दृष्टि नहीं, व्यक्तित्व भी लौटेगा। श्री गणेश विनायक हॉस्पिटल में ऐसी कई सफल कहानियाँ हैं - धान के खेत से लौटे किसान, जो कभी सिर्फ अंधकार देख सकते थे, अब फिर से अपनी फसल लहलहाते देख पा रहे हैं।

श्री गणेश विनायक हॉस्पिटल की नई बिल्डिंग के साथ नई दृष्टि की ओर बढ़ रहा है। डॉक्टर अमृता का सपना है -'छत्तीसगढ़ में चेन्नई के शंकर नेत्रालय और हैदराबाद के एलवी प्रसाद जैसी सुविधाएं उपलब्ध हों।'

यह सपना सिर्फ ईंट-पत्थर का नहीं, बल्कि हर उस आंख के पुनर्जन्म की कहानी है, जो मिट्टी के कणों में गुम हो गई थी।

पुरुष प्रधान नेत्र चिकित्सा जगत में डॉ. अमृता का आत्मविश्वास अद्वितीय है। वह कहती हैं - 'नेतृत्व में संवेदना जरूरी है, और यह संवेदना स्त्रियों की शक्ति है।' उनके शब्द सिर्फ प्रेरणा नहीं, नेत्र-जगत में नारी नेतृत्व की एक नई लकीर खींचते हैं। डॉ अमृता का मानना है छत्तीसगढ़ की आंखों को अब आधुनिक तकनीक से ज्यादा जागरूकता की जरूरत है। चश्मे, सही इलाज और समय पर डॉक्टर के पास जाना - यही वो हथियार हैं जो धान के इस हरित प्रदेश को दृष्टिहीनता से बचा सकते हैं। 'जब खेतों की लहराती फसलें आंखों में समाने लगे, तब आंखों को बचाना सबसे बड़ा कर्म हो जाता है।'

हम हॉस्पिटल नहीं बना रहे, हम आंखों से जुड़ी उम्मीदें गढ़ रहे हैं

“हम 'मरीजों को ग्राहक नहीं, परिवार का हिस्सा मानना।' इसलिए यहाँ कभी वो ठंडी औपचारिकता नहीं मिलती, जो बड़े-बड़े कॉर्पोरेट अस्पतालों में होती है। यहाँ डॉक्टर की नजर रिपोर्ट से पहले आंखों में झांकती है।”

Dr. CharuDutt Kalamkar
Director
MBBS, MS
(AIIMS, New Delhi)
Glucoma specialist

ये सिर्फ आंखों की बात नहीं है, ये भरोसे की बात है। वो भरोसा जो अंधेरे में टिमटिमाते दीपक को देख, कोई किसान कहता है- 'चलो, अब तो दिखने लगा कुछ!' ये कहानी है उस दीपक की जो आज छत्तीसगढ़ में हर गांव, हर कस्बे और हर कोने तक रोशनी बांट रहा है। नाम है **-श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल।**

इसकी शुरुआत किसी सरकारी बजट, किसी कॉर्पोरेट फंडिंग, या किसी ग्लैमर से नहीं हुई। इसकी शुरुआत हुई एक निश्चय से -कि अगर आंखें शरीर की खिड़कियां हैं, तो ये खिड़कियां हर आम आदमी के लिए खुलनी चाहिए।

डॉ. चारू दत्त कलमकार -एक नाम, जो दिल्ली एम्स की दीवारों से निकलकर, उस रायपुर लौट आया जहाँ स्वास्थ्य व्यवस्था खुद इलाज मांग रही थी। कोई और होता तो कहता - 'यहाँ कुछ नहीं रखा।' लेकिन डॉ. चारु ने कहा - 'यहीं तो सब कुछ रखना है।' एक छोटे से क्लिनिक में एक बड़ी दृष्टि जन्म ले रही थी। फिर इस संकल्प में जुड़ गए दो और आंखों के फ़कीर - डॉ. विनय जायसवाल और डॉ. अनिल गुप्ता। इन लोगों ने न कोई दिखावा किया, न कोई शोर मचाया। बस आंखों की सेवा को एक मिशन बना लिया। यहाँ इलाज सिर्फ मेडिकल टर्म नहीं है, यह एक रिश्ता है **- भरोसे का, संवेदना का, और सम्मान का, यहाँ अस्पताल नहीं, परिवार मिलता है ।**

वाकई, यह संस्थान सिर्फ मोतियाबिंद या चश्मे तक सीमित नहीं है। यह रेटिना, ग्लूकोमा और खासकर भेंगापन (Squint) या आंखों के तिरछेपन जैसी सामाजिक रूप से कलंकित मानी जाने वाली समस्याओं का भी ईलाज होता है। श्रीगणेश विनायक आई हॉस्पिटल न केवल सफल इलाज कर रहा है, बल्कि लोगों की सोच बदल रहा है।

डॉ. चारुदत्त के अनुसार, **'अक्सर लोग आंखों के तिरछेपन को केवल सौंदर्य दोष मानते हैं, लेकिन यह एक न्यूरो-ऑप्टिकल समस्या है, जो बच्चों और बड़ों दोनों में देखी जाती है। समय पर उपचार न होने पर यह दृष्टि क्षमता को भी प्रभावित कर सकती है।'** आज यह मध्य भारत का सबसे अग्रणी Squint सर्जरी सेंटर बन चुका है। और ये किसी ब्रांडिंग से नहीं हुआ, बल्कि हर ऑपरेशन के साथ, हर मुस्कान के पीछे, हर चमकती आंख के अंदर मेहनत और ममता से हुआ है। स्क्विंट की पहचान और उपचार के लिए अस्पताल द्वारा विशेष क्लीनिक संचालित किया जा रहा है, जहां पर व्यक्तिगत जांच और थैरेपी के साथ आवश्यक होने पर माइक्रो सर्जरी की सुविधा भी उपलब्ध है।

कई लोग पूछते हैं - नेत्र अस्पताल के लिए इतना बड़ा ढांचा क्यों? तो डॉ. चारू मुस्कुरा कर कहते हैं - **'हम सिर्फ इलाज नहीं करते, हम दृष्टि देते हैं। और दृष्टि के लिए जगह नहीं, सोच बड़ी चाहिए।'** आज 100 बेड, अत्याधुनिक ऑपरेशन थिएटर, प्राइवेट रूम और टेक्नोलॉजी से सुसज्जित यह अस्पताल सिर्फ रायपुर तक सीमित नहीं है। दूर-दराज के गाँवों में 20 विज़न सेंटर, शहरी झुग्गियों में मोबाइल आई केयर यूनिट्स, और टेलीमेडिसिन की सुविधा के साथ यह मिशन अब आंदोलन बन चुका है।

भले ही अस्पताल अब 40,000 वर्ग फीट तक विस्तार की ओर बढ़ रहा है, पर मकसद वही है - **'मरीजों को ग्राहक नहीं, परिवार का हिस्सा मानना।'** इसलिए यहाँ कभी वो ठंडी औपचारिकता नहीं मिलती, जो बड़े-बड़े कॉर्पोरेट अस्पतालों में होती है। यहाँ डॉक्टर की नजर रिपोर्ट से पहले आंखों में झांकती है, और हाथ नब्ज से पहले कंधे पर सहारा देता है। NABH प्रमाणन, DNB प्रशिक्षण की मान्यता, और देश-विदेश में प्रस्तुत हो रहे शोध - ये सब उपलब्धियाँ हैं, लेकिन इनकी जड़ में वो संवेदना है जिसने गरीबों की झुग्गियों से लेकर आदिवासी अंचलों तक आंखों को रौशन किया है।

यह अस्पताल केवल इलाज नहीं करता, यह कलंक तोड़ता है, आत्मविश्वास लौटाता है, और सामाजिक बदलाव की दृष्टि देता है।

रेटिना कभी शोर नहीं मचाती

Dr. Jayesh Patil
MBBS, MS, Retina Consultant (Sankara Nethralaya, Chennai)

'अगर देखना ही बंद हो जाए, तो आइना क्या दिखाएगा ?'

इस सवाल का जवाब विज्ञान के पास है -और आत्मा के पास भी। आंखें सिर्फ एक इंद्रिय नहीं हैं। ये वह पुल हैं जहाँ चेतना, प्रकाश के स्पर्श को अनुभव में बदल देती है। और इस पुल का सबसे संवेदनशील, सबसे नाजुक लेकिन सबसे मौन हिस्सा है - रेटिना

रेटिना, जहाँ तस्वीरें नहीं बनतीं -संवेदनाएँ बनती हैं। और यही संवेदनाएँ सीधे मस्तिष्क तक जाती हैं - **बिना किसी आवाज़, बिना किसी रंगीन झलक के। यही कारण है कि जब रेटिना क्षतिग्रस्त होती है, तो न कोई दर्द होता है, न सूजन। बस धीरे-धीरे, बिल्कुल चुपचाप, जीवन की तस्वीर धुंधली होने लगती है।** श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल के रेटिना विशेषज्ञ, डॉ. जायेश पाटिल से जब नरेंद्र पाण्डेय ने पूछा- 'डॉ. साहब, आंखों की बात तो सब करते हैं, पर रेटिना की बात क्यों छूट जाती है?' डॉ. पाटिल मुस्कराए। बोले -'क्योंकि रेटिना कभी शोर नहीं मचाती।' 'कोई दर्द नहीं होता। कोई लालिमा नहीं दिखती। लेकिन एक दिन अचानक लगता है - सब कुछ फीका है- और तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।'

आज, हम उस डिजिटल युग में जी रहे हैं जहाँ हर चेहरा मोबाइल स्क्रीन में है। स्क्रीन टाइम अब सिर्फ आदत नहीं, हमारी दिनचर्या है। और इस आदत ने जन्म दिया है - डिजिटल आई स्ट्रेन को। डॉ. पाटील बताते हैं-'ब्लू लाइट सीधे वार नहीं करती, लेकिन लगातार हमला करती है। यह वैसा ही है जैसे दोपहर की धूप में चुपचाप बैठे रहो - धीरे-धीरे त्वचा जलने लगती है।'

लक्षण जिन्हें नज़रअंदाज़ करना आत्मघात है कुछ संकेत हैं जो चेतावनी देते हैं, पर हम उन्हें व्यस्तता में अनदेखा कर देते हैं- अचानक धुंधला दिखाई देना,रौशनी की चमक या 'फ्लोटर्स' दिखना,सीधी रेखाओं का टेढ़ा दिखना,रंगों का फीका पड़ना

डॉ. पाटिल चेताते हैं- 'ये लक्षण डायबिटिक रेटिनोपैथी, मैक्यूलर डिजनरेशन या रेटिनल डिटैचमेंट के हो सकते हैं। और देरी का मतलब है - स्थायी दृष्टि हानि।' लेकिन अंधकार के विरुद्ध विज्ञान के पास मशाल है आज, श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल में OCT Angiography जैसी अत्याधुनिक तकनीकें उपलब्ध हैं -जो बिना चीरफाड़, सिर्फ कुछ मिनटों में रेटिना के हर कोने की सूक्ष्मता से जांच कर सकती हैं। यह सिर्फ इलाज नहीं है ० यह भविष्य की दृष्टि को बचाने का वादा है।

दृष्टिहीनता अब भविष्यवाणी नहीं - एक चुनौती है। और विज्ञान के पास इसका जवाब है।

तो अगली बार जब आइना धुंधला दिखे तो समझ जाइए शायद रेटिना पुकार रही है। और उस पुकार को समय रहते सुन लेना ही - सही दृष्टिकोण है।

रौशनी आपके निर्णय का इंतज़ार नहीं करती

Dr. Shubhank Khare
(MBBS, MS, FVRs, Retina & Uvea Consultant (Arvind Eye Hospital, Coimbatore)

जब जीवन की आपाधापी में शरीर थकता है, तो वह हमें संकेत देता है— कभी थकावट में, कभी ब्लड शुगर के उतार-चढ़ाव में। पर जब आँखें धुंधलाने लगें, तो समझ लीजिए चेतावनी अब याचना में बदल गई है। यह वही क्षण है, जब डायबिटीज केवल एक मेटाबोलिक डिसऑर्डर नहीं रहती, वह हमारी दृष्टि की रेखा पर कालिख फेरने लगती है।

श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल के रेटिना विशेषज्ञ डॉ. शुभांक खरे कहते हैं- बढ़ती लाइफ एक्सपेक्टेंसी और बदलती जीवनशैली के साथ आज की सबसे बड़ी चिंता है - लाइफ़स्टाइल डिसीसेज़, जिनमें डायबिटीज़ शीर्ष पर है। इसका गंभीर असर हमारी आंखों पर पड़ता है ।'डायबिटिक रेटिनोपैथी एक ऐसी बीमारी है जो तब तक पहचान में नहीं आती जब तक काफी नुकसान हो चुका होता है। अक्सर मरीज तब आते हैं जब नजर कमज़ोर हो चुकी होती है, और तब इलाज की संभावनाएं सीमित हो जाती हैं। इसीलिए हमारी सलाह है कि हर डायबिटिक मरीज - चाहे शुगर नियंत्रित हो या नहीं- हर 6 महीने में एक बार आंखों की जांच अवश्य कराएं।'

तकनीक से बदलती तस्वीर

डॉ. खरे के अनुसार, आधुनिक तकनीकें अब रेटिना की गहराई से जांच करना संभव बनाती हैं। यह जानना जरूरी होता है कि रोशनी में जो कमी आई है, वो डायबिटिक रेटिनोपैथी की वजह से है या किसी और कारण से। इन अत्याधुनिक मशीनों के जरिए हम ये भलीभांति जान पाते हैं और समय रहते इलाज की दिशा तय कर सकते हैं। जैसे -

OCT मशीन – रेटिना में सूजन कहां है, कितनी है, यह सटीक पता चल जाता है। , OCT Angiography – बिना डाई के आंखों की रक्त नलिकाओं में ब्लॉकेज की जानकारी मिल जाती है।

एक अस्पताल, जहां मरीज भी परिवार है-डॉ. खरे कहते हैं। श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल की सबसे बड़ी खासियत है -फ्रेंडली और डेडिकेटेड एनवायरनमेंट। यहां न केवल अत्याधुनिक मशीनें हैं, बल्कि अनुभव का खज़ाना भी है। अलग-अलग क्षेत्र से आने वाले मरीजों से हमें रोज़ नई-नई स्थितियों को देखने और समझने का मौका मिलता है।

अंत में डॉ. शुभांक खरे कहते हैं-

अगर आप डायबिटीज से जूझ रहे हैं, देर न करें। हर छह महीने में एक बार आँखों की स्क्रीनिंग कराएँ। क्यूंकि जब बात आँखों की हो, तो 'कभी नहीं' और 'थोड़ी देर और' के बीच सिर्फ एक धुंधलापन होता है, जो हमेशा के अंधकार में बदल सकता है। आँखें

अनमोल हैं, और उनकी सुरक्षा आज की सबसे जरूरी प्राथमिकता। **'यदि आंखें आत्मा की खिड़की हैं, तो श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल उसकी सुरक्षा के प्रहरी हैं।'**

सौन्दर्य के साथ संपूर्णता

Dr. Rohit Rao

(MBBS, MS, FACS, Oculoplasty Consultant (LV Prasad Eye Institute, Hyderabad)

आंखें न केवल चेहरे की सुंदरता का केंद्र होती हैं, बल्कि हमारी भावनाओं और व्यक्तित्व का भी आइना होती हैं। लेकिन कई बार आंखों से जुड़ी समस्याएं, जैसे ट्यूमर, झुकी हुई पलकें, या आंसुओं की नली में रुकावट, न केवल स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं, बल्कि आत्मविश्वास को भी कम करती हैं। ऐसी समस्याओं के समाधान के लिए प्लास्टिक सर्जरी एक वरदान साबित हो रही है, और छत्तीसगढ़ के श्री गणेश विनायक हॉस्पिटल इस क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

प्रसिद्ध आकलोप्लास्टिक सर्जन डॉ रोहित राव बताते है कि श्री गणेश विनायक हॉस्पिटल में आंखों से संबंधित जटिल और अनूठी सर्जरी को अंजाम दिया जा रहा है। चाहे वह आंखों के पास ट्यूमर का इलाज हो, झुकी पलकों को ठीक करना हो, या आंसुओं की नली में ब्लॉकेज को दूर करना हो, हॉस्पिटल की अनुभवी टीम और आधुनिक तकनीकों ने मरीजों को नया जीवन दिया है। उदाहरण के लिए, जिन मरीजों को लगातार आंसुओं की समस्या होती है, उनके लिए नलिकाओं को खोलने की प्रक्रिया अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुई है। यह सर्जरी न केवल कार्यात्मक सुधार करती है, बल्कि मरीजों के चेहरे की सुंदरता और आत्मविश्वास को भी बढ़ाती है।

डॉ रोहित कहते है कि छत्तीसगढ़ जैसे उभरते राज्य में इस तरह की विश्वस्तरीय सुविधाएं मिलना, किसी आश्चर्य से कम नहीं। अत्याधुनिक लेजर उपकरण, माइक्रो–सर्जरी यूनिट्स और अनुभवी नेत्र प्लास्टिक सर्जन–ये सब मिलकर इस हॉस्पिटल को केवल एक संस्थान नहीं, बल्कि उम्मीद का मंच बनाते हैं। यह सब केवल सुविधा तक सीमित नहीं। यहां इलाज का आधार आर्थिक हैसियत नहीं, मानवीय गरिमा है। चाहे वह किसी मजदूर का बच्चा हो या किसी अधिकारी की माताजी–इलाज का स्तर एक जैसा है, स्नेह का तापमान समान।

हॉस्पिटल की सबसे बड़ी खासियत है इसकी अत्याधुनिक सुविधाएं। यहां उपलब्ध उपकरण और तकनीकें देश के शीर्ष संस्थानों के बराबर हैं। यही कारण है कि छत्तीसगढ़ जैसे क्षेत्र में भी विश्वस्तरीय सर्जरी संभव हो पा रही है। चाहे वह जटिल नेत्र सर्जरी हो या कॉस्मेटिक सुधार, हॉस्पिटल की टीम हर चुनौती के लिए तैयार है। श्री गणेश विनायक हॉस्पिटल का दृष्टिकोण सभी मरीजों के प्रति समानता का है। यहां न तो मरीजों की आर्थिक स्थिति देखी जाती है, न ही उनका सामाजिक स्तर। अमीर हो या गरीब, प्रत्येक मरीज को एकसमान उच्च गुणवत्ता वाला इलाज और देखभाल प्रदान की जाती है। यह समावेशी दृष्टिकोण हॉस्पिटल को न केवल एक चिकित्सा केंद्र, बल्कि मानवता की सेवा का प्रतीक बनाता है।

मौसम नहीं, मानसिकता है बाधा

Dr. Bhavin Patel

(MBBS, DNB)

आंखें सिर्फ देखने का माध्यम नहीं, यह जीवन के प्रति हमारी जागरूकता की खिड़की हैं। पर जब इन आंखों के सामने धुंध छाने लगे, और दुनिया धुंधली सी दिखाई देने लगे—तो यह केवल शारीरिक समस्या नहीं रह जाती, यह आत्मविश्वास की भी चुनौती बन जाती है।

छत्तीसगढ़ , जहां अब भी कई लोग गर्मियों की दोपहर से डरते हैं, वहीं मोतियाबिंद को लेकर भी एक लंबी लकीर खिंची हुई है—भय और भ्रांतियों की। लेकिन इन भ्रांतियों को तोड़ने के लिए जिस संजीदगी से श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल कार्य कर रहा है, वह न केवल चिकित्सा का उदाहरण है, बल्कि जनजागरूकता का आंदोलन भी है।

कैटरेक्ट सर्जरी के विशेषज्ञ डॉ. भाविन पटेल बड़ी सादगी से एक गहरा सत्य सामने रखते हैं— गर्मी में सर्जरी से डरना वैसा ही है जैसे बारिश में भीगने से डरकर खेत में बीज न बोना। अगर तकनीक सुरक्षित है, तो मौसम कोई मायने नहीं रखता।

वास्तव में, छत्तीसगढ़ में अप्रैल से जुलाई तक बड़ी संख्या में लोग सर्जरी से परहेज़ करते हैं। लेकिन आधुनिक माइक्रो-इंसिजन तकनीक, फेको मशीन और टॉपिकल एनेस्थीसिया जैसी विधियां आज इतनी उन्नत हो चुकी हैं कि मौसम, अब सिर्फ एक भ्रम है—एक मानसिक बाधा।

'इंतज़ार मत कीजिए, रौशनी आपके निर्णय का इंतज़ार नहीं करती' एक और गहरी भ्रांति—मोतियाबिंद को 'पकने' देना चाहिए। डॉ. पटेल इसे स्पष्ट रूप से नकारते हैं— 'जब आपकी दृष्टि रोज़मर्रा के जीवन को प्रभावित करने लगे, वहीं से सर्जरी की ज़रूरत शुरू हो जाती है। समय पर निर्णय ही सही इलाज है।'

सोच , जो गांव-गांव तक पहुंचनी चाहिए।

श्री गणेश विनायक हॉस्पिटल- इलाज नहीं, अभियान है यह,जहां बड़े शहरों में इलाज 'प्रवेश शुल्क' की तरह महंगा होता जा रहा है, वहीं श्री गणेश विनायक हॉस्पिटल दूर-दराज़ के गांवों तक शिविरों के ज़रिए चिकित्सा की ज्योति जला रहा है। ये शिविर सिर्फ़ इलाज नहीं देते, सोच बदलते हैं। डॉ. पटेल बताते हैं एक दिन हमने 110 सर्जरी पूरी कीं, और सोच ही रहे थे कि काम खत्म हुआ—तभी सूचना आई कि अगले दिन के लिए 120 मरीज और तैयार हैं। थकान

नहीं हुई, बल्कि गर्व महसूस हुआ। यह आंकड़े नहीं हैं, यह विश्वास है—जो लोगों ने इस हॉस्पिटल पर जताया है।

दूरियों को पाटता विश्वास

श्री गणेश विनायक हॉस्पिटल प्रतिदिन सौ से अधिक ओपीडी मरीजों को देखता है, और छत्तीसगढ़ ही नहीं, झारखंड, ओडिशा और मध्यप्रदेश तक से लोग यहां आते हैं। संचालक मंडल की सोच साफ़ है—'जहां ज़रूरत है, वहीं पहुंचना है।' मोतियाबिंद कोई 'विलेन' नहीं है। यह एक सामान्य जैविक प्रक्रिया है, जो उम्र के साथ हो सकती है। समस्या है, तो केवल हमारे भीतर के डर और भ्रांति की। और इस डर को हराने का नाम है जागरूकता।

तो आइए, इस गर्मी में खुद को ठंडक दें—भय को नहीं, रौशनी को अपनाकर। मोतियाबिंद से न डरें, उसका समय पर इलाज कराएँ। क्योंकि 'आंखें अनमोल हैं—इनका ध्यान रखें। मोतियाबिंद को पकने न दें, निर्णय को पक्का करे।'

हर आँखों में उजाले का सपना

Dr. Mayank Dubey
Director Champa Branch
MBBS,D.O.M.S

चांपा की गलियों में जब भी कोई बूढ़ा किसान धुंधली आँखों से आसमान को ताकता था, तो बस एक ही सवाल उठता था — क्या अब रोशनी लौटेगी? इसी सवाल का जवाब लेकर 2015 में डॉ. मयंक दुबे के साथ आया — श्री गणेश विनायक आँई हॉस्पिटल।

डॉ. मयंक, एक ऐसा नाम, जिसने अपने हुनर से नहीं, अपने समर्पण से लोगों की आँखों में दोबारा सपना भरना शुरू किया। 2013 में पोस्ट ग्रेजुएशन पूरा करने के बाद, जब देश के बड़े मेडिकल संस्थानों के दरवाज़े खुले थे, तब भी मयंक जी ने गांव की पगडंडियों को चुना।

रायपुर में श्री गणेश विनायक परिवार — डॉ. अनिल गुप्ता और डॉ. विनय जायसवाल — के स्नेहिल मार्गदर्शन में जब उन्होंने अपनी यात्रा शुरू की, तो भीतर एक ही संकल्प था- 'अपनों के बीच लौटना है, रोशनी बनकर।' 2014 में अपने गृहनगर चांपा लौटे। और फिर 2015 में डॉ चारुदत्त कलमकार जैसे साथियों के साथ मिलकर अस्तित्व में आया — श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल, चांपा ब्रांच। छोटे से सपने को आकार देने में चुनौतियाँ कम नहीं थीं। स्थानीयों का भरोसा जीतना आसान नहीं था। अपनों को ही पराया समझने की पुरानी आदत थी। पर डॉ मयंक रुके नहीं। गांव-गांव, गली-गली, खेत-खलिहानों में जाकर हेल्थ कैंप लगाए। उन्होंने सिर्फ आँखों का इलाज नहीं किया, विश्वास का भी इलाज किया।

धीरे-धीरे रायपुर के श्री गणेश विनायक हॉस्पिटल के सभी विशेषज्ञ डॉक्टर्स का सहयोग मिला। चांपा में वही उच्च स्तरीय नेत्र सर्जरी शुरू हुई, जो बड़े शहरों की पहचान थी। माउथ पब्लिसिटी का जादू चला — और आज, चांपा में श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल एक विश्वास का दूसरा नाम बन चुका है।

महीने में एक से दो बार रायपुर से रेटिना और ओकुलोप्लास्टिक सर्जन आते हैं। लेकिन सपना अभी बाकी है — डॉ. मयंक का अगला लक्ष्य है — 'चांपा में ही नियमित रेटिना सर्जरी शुरू करना।'

लेकिन यह लड़ाई सिर्फ मशीनों और सर्जरी की नहीं है —यह लड़ाई है जागरूकता की कमी से। यहाँ, लोग आज भी मोतियाबिंद को ही एकमात्र नेत्र रोग मानते हैं। डायबिटीज से होने वाली रेटिना बीमारियाँ, या धान की बालियों से होने वाले कॉर्निया इन्फेक्शन — इनका दर्द वे तब समझते हैं, जब अंधेरा घेर लेता है।कटाई के मौसम में हर साल न जाने कितनी आँखें धूल और चोट से जख्मी होती हैं।

डॉ. मयंक हर किसान से कहते हैं —

'आँख है तो संसार है। छोटी चोट को हल्के में न लें। योग्य नेत्र विशेषज्ञ से तुरंत संपर्क करें।'

इसी भावना के साथ अस्पताल पारदर्शी सुरक्षा चश्मे भी बाँटता है, ताकि खेतों में मेहनत करने वाली आँखें भी सुरक्षित रहें।आज की तेज़ रफ्तार ज़िंदगी ने नयी चुनौतियाँ भी दी हैं। गर्मी और एलर्जी से आँखों में जलन, मोबाइल स्क्रीन की लत से ड्राई आई, इंडस्ट्रियल एरिया से उड़ती धूल और रसायनों से आँखों में जलन — इन सबके लिए भी यहाँ आधुनिक समाधान मौजूद हैं। डॉ. मयंक का संदेश साफ है —

'समस्या को छोटा न समझिए। सही समय पर सही इलाज लीजिए।' श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल सिर्फ इलाज नहीं करता, वह सामाजिक जिम्मेदारी भी निभाता है। कम दरों पर कैटरेक्ट सर्जरी, ज़रूरतमंदों के लिए निःशुल्क ऑपरेशन — यह सेवा है, जो कर्तव्य से जन्मी है। आज चंपा के लिए श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल सिर्फ एक अस्पताल नहीं, यह एक वादा है —रोशनी का, सुरक्षा का, और एक बेहतर भविष्य का। अगर आपकी आँखों को भी उम्मीद चाहिए, तो आपके अपने शहर में — श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल, चांपा — जहाँ हर आँख में फिर से उजाला लिखने की कोशिश हो रही है।

श्री गणेश विनायक फाउंडेशन

जहां आंखें मुस्कराती है

छत्तीसगढ़ की धूप में पसीने से भीगी खेतों की मेड़ हो या स्टील फैक्ट्री की भट्ठियों में तपता श्रमिक — आंखें हर जगह हैं, पर क्या हर आंख देख पा रही है? शायद नहीं। और यही वो अंधकार है, जिससे लड़ रहा है एक संकल्प। **2015 में कुछ संवेदनशील दिलों और श्री गणेश विनायक आई हास्पिटल के निदेशकों की प्रबुद्ध आंखों ने मिलकर एक सपना देखा — ऐसा सपना जो दूसरों को देखने की ताकत दे। श्री गणेश विनायक फाउंडेशन उसी सपने की ठोस जमीन पर खड़ी एक सामाजिक क्रांति है** — जो रोशनी बांट रही है, आंखों से आंखों तक। आज, इस नींव से उपजा विश्वास 20 जिलों तक फैल चुका है, और इसकी शाखाएं उन गांवों तक पहुंच रही हैं । इस फाउंडेशन का मिशन सिर्फ इलाज नहीं, बल्कि समानता है — आर्थिक, भौगोलिक और सामाजिक सीमाओं को लांघती हुई नेत्र देखभाल की समरसता। यह संस्था न केवल देख रही है, बल्कि दूसरों को देखने लायक बना रही है।

एक दृष्टि, एक मिशन – 'अंधत्व मुक्त छत्तीसगढ़'

भारत में अंधापन कोई अकेली बीमारी नहीं, यह एक सामाजिक उपेक्षा है। शहरों के शोर में, गांवों की खामोशी में, बच्चों की किताबों में, बुजुर्गों की पलकें टटोलती हैं - पर सब कुछ धुंधलाया हुआ। और यहीं से शुरू होता है यह युद्ध — मोतियाबिंद के खिलाफ, अज्ञानता के खिलाफ, और उपेक्षा के खिलाफ।

1. दृष्टि दीप- रोशनी की लौ गांव-गांव

यह कार्यक्रम केवल सेवा नहीं, एक आंदोलन है। यह उन गांवों की आंखों को रोशनी दे रहा है, जिन्हें अब तक किसी ने देखा ही नहीं था। बस्तर से सरगुजा तक, जहां कभी सड़कें भी संकोच करती थीं, वहां अब 'दृष्टि दीप' का दीपक जल रहा है। नेत्र शिविर, स्क्रीनिंग, चश्मों का वितरण, और मोतियाबिंद सर्जरी — ये सब कुछ 'जरूरत' नहीं, 'अधिकार' की तरह दिया जा रहा है। ये केवल सेवाएं नहीं, ग्रामीण आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना है। आंखें जो पहले धुंध देखती थीं, अब बच्चों के खिलते चेहरे और धरती की हरियाली को पहचानने लगी हैं।

हर उजाला सूरज से नहीं आता... कुछ उजाले इंसानों की आंखों से फूटते हैं। 'कभी-कभी रोशनी जलाने के लिए मशाल नहीं, बस दृष्टिकोण बदलने की ज़रूरत होती है।'

छत्तीसगढ़ की माटी में जो बात है, वही रंग यहां के लोगों की दृष्टि में है। लेकिन जब यही दृष्टि धुंधला जाए, जब रोशनी केवल दिन के समय तक सीमित रह जाए — तब किसी को आगे आना होता है... मशाल लेकर, लेकिन आग नहीं — दृष्टि लेकर।

2. बाल दृष्टि कार्यक्रम- बच्चों की आंखों में भविष्य

बच्चे केवल कक्षा की ब्लैकबोर्ड नहीं पढ़ते, वे भविष्य को पढ़ते हैं। अगर वे नहीं देख पाएंगे, तो हम क्या उम्मीद कर सकते हैं? यह कार्यक्रम सिर्फ इलाज नहीं, बल्कि दृष्टि की शिक्षा है — बच्चों को, शिक्षकों को और पूरे शिक्षा तंत्र को। स्कूल — जहां किताबों से ज्ञान और आंखों से भविष्य पढ़ा जाता है। फाउंडेशन ने स्कूलों को न केवल चश्मा दिया, बल्कि बच्चों को नेत्र स्वास्थ्य का पाठ भी पढ़ाया। शिक्षकों को प्रशिक्षित कर उन्होंने एक नये 'दृष्टि प्रहरी' तैयार किए हैं जो आने वाली पीढ़ियों की आंखों की रक्षा करेंगे।

3. विश्वकर्मा : श्रमिकों की आंखों से न्याय

औद्योगिक श्रमिक उस लोहे की तरह हैं जो गरम होकर राष्ट्र को आकार देते हैं। लेकिन अगर उनकी आंखें थक जाएं? फाउंडेशन ने इसे समझा और हर कारखाने, हर श्रमिक तक दृष्टि पहुंचाई। यह उन्हें देखने का अधिकार नहीं, गर्व दे रहा है। कारखानों में चमकते लोहे से आंखें थक जाती हैं। 'विश्वकर्मा' प्रोग्राम ने इन श्रमिकों को यह बताया कि काम करने के लिए केवल मेहनत नहीं, सही दृष्टि भी चाहिए। शिविरों के माध्यम से न केवल आंखें जांची गईं, बल्कि श्रमिकों को यह एहसास दिलाया गया कि उनका स्वास्थ्य प्राथमिकता है।

4. 'राही': सफर में आंखें थकती नहीं

वे जो देश को जोड़ते हैं, अपनी आंखों की उपेक्षा करते रहे। राही ने उन्हें पहचान दिलाई। अब वो रास्ते ही नहीं देखते, अपनी पहचान भी देखने लगे हैं। भारत के ट्रक ड्राइवर — जो देश की नसों में जीवन का प्रवाह बनाए रखते हैं — उनकी आंखें शायद ही किसी ने देखी हों। लेकिन 'राही' ने देखा, समझा और सेवा दी। सड़कों पर दिन-रात दौड़ते इन रथियों की आंखों की रक्षा करके फाउंडेशन ने उन्हें वो सम्मान दिया, जो हर 'राही' का अधिकार है।

2023-2024 की झलक-आँकड़ों की आंखों से सच

528	नेत्र शिविर
66,681	स्क्रीनिंग
4,493	मुफ्त सर्जरी
11,902	मुफ्त चश्मे

इन आँकड़ों के पीछे हज़ारों मुस्कुराते चेहरे हैं। वो दादी जो फिर से अपनी पोती को पहचान पाई, वो बच्चा जो अब किताब की हर पंक्ति पढ़ पा रहा है, और वो श्रमिक अब पुनः मशीन चला रहे हैं।

5. शहरी नेत्र सेवा : रोशनी हर गली की

रायपुर की भीड़ में अगर कोई चीज सबसे अधिक खो जाती है, तो वह है गरीब की जरूरत। यह शहरी नेत्र कार्यक्रम एक ऐसी लौ है जो वहां जल रही है, जहां रोशनी अक्सर सरकार के बजट में खो जाती है। रायपुर के 70 वार्ड, जहां भीड़ है, गरीबी है, और सरकारी अस्पतालों की सीमाएं। ऐसे में यह शहरी कार्यक्रम सिर्फ सेवा नहीं, क्रांति है। जब सेवा गरीब की गली में पहुंचती है, तब समाज में सिर्फ आंखें नहीं, सोच भी बदलती है।

दृष्टिकोण का मूल मंत्र- करुणा के साथ तकनीक

यह संस्था केवल तकनीक से नहीं, करुणा से काम करती है। जब अत्याधुनिक मशीनें ग्रामीण आंखों को स्कैन करती हैं, तो यह विज्ञान और संवेदना का मिलन होता है — यही है इस संस्था की आत्मा। यह संस्था सिर्फ दान नहीं, दायित्व का निर्वाह कर रही है। अत्याधुनिक तकनीक, स्थानीय भागीदारी और प्रशिक्षित टीम — यह त्रिवेणी उस 'नेत्र सामाजिकता' को जन्म दे रही है जिसकी भारत को सख्त ज़रूरत है।

"श्री गणेश विनायक आई फाउंडेशन न केवल आंखों का इलाज करता है, हम देखेंगे, तब देखेंगे सिर्फ शब्द नहीं, एक वचन है - हर बच्चा अब किताब पढ़ सके, हर श्रमिक अपने हाथों की मेहनत देख सके, हर माँ अपने बच्चे की मुस्कान महसूस कर सके। आप भी नज़रिया बनिए, जो अनदेखे चेहरों को पहचान देता है। जो किसी की दुनिया को रौशनी दे सके। **डोनेशन के लिए नीचे दिए गए संपर्क पर जुड़िए** -क्योंकि जब आप देखेंगे, तभी तो दुनिया बदलेगी। क्योंकि उजाला बाँटने से घटता नहीं... बढ़ता है।

7880177782
www.sgvfoundation.org

Arun Singh

सेहत की नहीं, बात ज़िंदगी की है

Positive Health Zone

असल में फर्क है — बीमार न होने और सच में स्वस्थ होने में। और यही फर्क समझाने आ रहा है Positive Health Zone, रायपुर में बना एक अलग ही तरह का वेलनेस सेंटर। इसे शुरू किया है डॉ. अनिल गुप्ता ने — जो सिर्फ डॉक्टर ही नहीं, एक इंटरनेशनल NLP ट्रेनर और वेलनेस मेंटर भी हैं।

आजकल हम सब बाहर से तो फिट दिखते हैं — लेकिन अंदर से बिखरे हुए हैं। शरीर थका हुआ रहता है, दिमाग उलझा रहता है, रिश्ते कमजोर होते जा रहे हैं और आत्मा... वो तो जैसे कहीं खो गई है। हम दिखावे में तो आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन सच्चे सुख और संतुलन से दूर होते जा रहे हैं।

खाने का समय नहीं, नींद अधूरी, सोचने का वक्त नहीं — और फिर कहते हैं, 'हेल्दी रहना चाहिए।' पर क्या सच में हम हेल्दी हैं? या बस बीमार नहीं हैं, इसलिए अपने को स्वस्थ मान लेते हैं?

स्वस्थ वही नहीं जो बीमार नहीं, बल्कि वह है जो आत्मा से संतुलित है। World Health Organization ने 1948 में स्वास्थ्य की परिभाषा दी—

"A state of complete physical, mental and social well-being and not merely the absence of disease or infirmity." अर्थात स्वास्थ्य एक ऐसी अवस्था है जिसमें शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्ण रूप से कल्याण होता है, न कि केवल रोग या दुर्बलता की अनुपस्थिति।

आयुर्वेद कहता है

'समदोषः समाग्निः समधातु मलः क्रियाः'

'प्रसन्नात्मेन्द्रिय मनः स्वास्थ्यं इत्यभिधीयते'

अर्थात्-शरीर के त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) संतुलन में हों। पाचन अग्नि सुचारु रूप से कार्य करे। धातुएँ (शरीर की संरचना) और मल निष्कासन सही ढंग से हो। और सबसे अहम -मन, इन्द्रियाँ और आत्मा-प्रसन्न हों।

तो फिर पाज़िटिव हेल्थ क्या है -

Positive Health कोई टेस्ट रिपोर्ट नहीं है, यह एक अनुभव है – जिसमें शरीर में ऊर्जा का प्रवाह स्वाभाविक हो, मन में निरंतर आत्म-स्वीकृति हो, और आत्मा- हर निर्णय में हमारी राह दिखाती हो। जब हम चिंता, क्रोध, ईर्ष्या और असंतोष को 'सामान्य' मानने लगते हैं, तो रोग शरीर में नहीं— जीवनदृष्टि में प्रवेश कर जाता है। आज आवश्यकता है उस स्वास्थ्य की जो पैथोलॉजी की रिपोर्ट नहीं, बल्कि आत्मा की प्रतिध्वनि से प्रमाणित हो।

असल में फर्क है — बीमार न होने और सच में स्वस्थ होने में। और यही फर्क समझाने आ रहा है Positive Health Zone, रायपुर में बना एक अलग ही तरह का वेलनेस सेंटर। इसे शुरू किया है डॉ. अनिल गुप्ता ने — जो सिर्फ डॉक्टर ही नहीं, एक इंटरनेशनल NLP ट्रेनर और वेलनेस मेंटर भी हैं।

यह जगह आपको सिर्फ इलाज नहीं देती — यह आपको जीने का एक नया नजरिया देती है।

यहाँ क्या खास है?

1. Quantum Veda Lab

जहाँ आप अपनी ऊर्जा को समझते हैं . यहाँ आपके शरीर की नहीं, आपकी ऊर्जा की जाँच होती है- खास डिवाइसेज् से चक्रों और एनर्जी फील्ड का एनालिसिस . हम अक्सर सोचते हैं कि बीमारी केवल शरीर की चीज़ है — लेकिन असल में बीमारी की शुरुआत अक्सर वहाँ से होती है जहाँ हम देखते ही नहीं-ऊर्जा में।

GDV Bio-Well एक खास तरह की तकनीक है, जो हमारे शरीर के एनर्जी सिस्टम, यानी चक्रों और उनके संतुलन को मापती है। ये मशीन आपके शरीर के आसपास के बायो-फील्ड को स्कैन करती है, और बताती है कि कहाँ ऊर्जा संतुलित है और कहाँ रुकावट है।

GDV Bio-Well यही दिखाता है आपके शरीर में ऊर्जा कहाँ सही प्रवाहित हो रही है, और कहाँ नहीं।और फिर उसी के अनुसार आपका ट्रीटमेंट, ध्यान, योग या कोचिंग प्लान किया जाता है।क्योंकि इलाज वहाँ से शुरू होना चाहिए, जहाँ से असंतुलन शुरू हुआ था — यानी ऊर्जा से।

2. लाइफस्टाइल क्लिनिक – जहाँ आदतें बदलती हैं, ज़िंदगी सँवरती है यह कोई आम डाइट क्लिनिक नहीं है। यहाँ आप

सिर्फ एक डाइट चार्ट नहीं लेते — बल्कि अपनी पूरी ज़िंदगी को नए नज़रिए से देखना शुरू करते हैं। लाइफस्टाइल क्लिनिक का मक़सद है - आपकी आदतों को Heal करना, क्योंकि असल बीमारियाँ वहीं से जन्म लेती हैं।

यहाँ आपको मिलता है

- **पर्सनल डाइट प्लान-** ऐसा प्लान जो आपके शरीर की प्रकृति, आपकी ऊर्जा और आपकी ज़रूरतों के हिसाब से तैयार किया जाता है।
- **रूटीन गाइडेंस-** नींद, स्क्रीन टाइम, सुबह से लेकर रात तक की पूरी दिनचर्या के लिए एक नया संतुलित सिस्टम।
- **बॉडी डिटॉक्स थैरेपी-** जिससे शरीर की थकान, सुस्ती और जमी हुई टॉक्सिन्स निकलती हैं, और आप फिर से रिफ्रेश महसूस करते हैं।
- यह डिपार्टमेंट उनके लिए है जो सिर्फ वजन घटाना नहीं चाहते —बल्कि अपनी आदतों को बदलकर एक नया जीवन जीना चाहते हैं।

3. आयुर्वेद डिपार्टमेंट – जहाँ विज्ञान और प्रकृति साथ चलते हैं यहाँ इलाज सिर्फ शरीर का नहीं होता — यहाँ शरीर, मन और चेतना को समझा जाता है और वो भी आधुनिक तकनीक और प्राचीन आयुर्वेद के संतुलन के साथ। यहाँ सबसे पहले किया जाता है — आधुनिक Quantum Devices की मदद से आपकी नाड़ी को गहराई से पढ़ा जाता है — ताकि समझा जा सके- आपके शरीर में वात, पित्त और कफ का संतुलन,आपके सत्त्व, रजस और तमस की स्थिति,आपके शरीर के पंचमहाभूत और सप्तधातु का स्तर और वह गहराई, जहाँ से आपकी समस्या ने जन्म लिया । इसके बाद तैयार होता है — एक पूरी तरह नेचुरल ट्रीटमेंट प्लान केरल की प्राचीन थैरेपीज़, प्रशिक्षित थैरेपिस्ट्स द्वारा शरीर को जड़ों तक डिटॉक्स करने वाली प्रक्रियाएँ और वो सब कुछ, जो आपकी सेहत को सिर्फ ठीक नहीं करता — संतुलित करता है। यह वह जगह है जहाँ प्रकृति, तकनीक और आत्मा - एक साथ काम करते हैं।

4. माइंड डिटॉक्स डिपार्टमेंट- क्योंकि दिमाग भी सफाई मांगता है!

आज की तारीख़ में सबसे ज्यादा गंदगी हमारे विचारों में है—डर, चिंता, तुलना, और सोशल मीडिया का लगातार दबाव। हम अपने शरीर की सफाई तो रोज़ करते हैं, पर क्या कभी अपने मन की धुलाई की है?

माइंड डिटॉक्स डिपार्टमेंट में Neuro Linguistic Programming (NLP) के ज़रिए मस्तिष्क में जमे पुराने मानसिक पैटर्न को री-प्रोग्राम किया जाता है—जैसे पुराने Operating System को अपडेट करना। वहीं, Psycho Neurobics Programming (PNP) द्वारा मन को Free & Flow Mode में लाया जाता है—जहां भावनाएँ बहती हैं, पर जकड़ती नहीं।

यह विभाग केवल तकनीक नहीं सिखाता, यह Find Brain & Body Harmony की यात्रा है—जहां दिमाग और शरीर एक लय में नाचते हैं।

पर्सनल काउंसलिंग और डीप थैरेपीज़ के माध्यम से आप आंतरिक शांति, एकाग्रता, और जीवन के प्रति नवीन दृष्टिकोण प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि अंततः, जब मन साफ़ होता है—तभी जीवन की असली चमक दिखाई देती है.कहने का मतलब ये है-

Positive Health Zone कोई आम सेंटर नहीं, ये एक सोच है। यहाँ हर चीज़ पर्सनलाइज़्ड है — आपकी बॉडी, माइंड और एनर्जी के हिसाब से। यहाँ इलाज नहीं, जीवन मिलता है — वो भी एक पूरे सिस्टम के साथ।

अगर आप भी सिर्फ बीमारियों से दूर नहीं, बल्कि सच में खुश और संतुलित ज़िंदगी जीना चाहते हैं —

तो एक बार Positive Health Zone ज़रूर आइए।

क्योंकि यहाँ से शुरू होती है नयी सेहत नहीं, एक नयी चेतना।

शांति की चादर में लिपटा एक और खूनी सच

'क्या नाम है तेरा ?' और अगले ही पल- एक गोली, एक चीख, एक और नई विधवा, एक और मातम, क्यों ? क्योंकि उस नाम में अल्लाह नहीं था, क्योंकि उसमें मोहम्मद नहीं था, क्योंकि वो ... हिंदू थे । पत्नी की आंखों के सामने उसका पति जमीन पर लहूलुहान पड़ा है। वो और कुछ नहीं कर सकी — सिर्फ रोई- बस चीखी। उन्होंने कहा 'ये मुसलमान नहीं है, मार दो!' ये भारत है ? या हम किसी अंधी सुरंग में हैं, जहाँ अब ज़िंदगी का मूल्य सिर्फ मज़हब से तय होता है ?

कभी वादियों का स्वर्ग कहा जाने वाला पहलगाम मे आज ट्यूलिप से ज्यादा ताबूत नजर आते हैं। 26 निर्दोष मारे गए। एक भी आतंकवादी नहीं। केवल टूरिस्ट- केवल इंसान। 'जब कश्मीर का जिक्र होता है, तब वादियाँ नहीं, वीरानियाँ गूंजने लगती हैं। 22 अप्रैल 2025 का दिन इसका ताज़ा दस्तावेज़ बन गया।' जब बैसरन घाटी में पर्यटक दोपहर को हरियाली और हिमवृष्टि का आनंद ले रहे थे, तब उसी शांत माहौल में अचानक आतंक की गोलियों की बौछार गूंजने लगी। आतंकवादी संगठन TRF ने एक सुनियोजित नरसंहार को अंजाम दिया—26 निर्दोष नागरिकों की जान ले ली गई।

कर्नाटक के मंजूनाथ , अपनी पत्नी और बेटे के साथ आए थे उनकी बीवी पल्लवी, चीखते हुए कहती है- 'मैंने कहा, मुझे भी मार दो' तो आतंकी हँसते हुए बोले- 'औरतों को नहीं मारते जाओ मोदी को बता दो!'

क्या ये मज़ाक है ? गोली मार दी, और फिर पॉलिटिकल मेसेज ?

भाईसाहब, अगर ये आतंक नहीं, तो फिर आतंक क्या है ? सड़कों पर सेना, हर मोड़ पर सुरक्षा, हर गाड़ी चेक होती है, फिर भी आतंकी सेना की वर्दी पहनकर आते हैं, धर्म पूछते हैं, गोली चलाते हैं और गायब हो जाते हैं ?

आप हमें बेवकूफ समझते हैं ? हमने करोड़ों का इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा कर लिया,लेकिन एक आतंकवादी नहीं पकड़ सकते ? हर बार वही प्रेस कॉन्फ्रेंस-'हम इसकी निंदा करते हैं, इलाके को घेर लिया गया है।'

'दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा' सुनिए -निंदा से लाशें जिंदा नहीं होतीं।

मीडिया कहता है 'धर्म मत जोड़िए इस घटना से' तो क्या बताएं ? शुभम का धर्म

मत बताएं? पल्लवी की चीख में मज़हब न सुनें? जब आतंकी खुद कहता है -'ये हिंदू है, मार दो!' तो आप कैसे कह सकते हैं कि ये धर्म से जुड़ा नहीं? और हम? हम क्या कर रहे हैं? जातियों में बंटे हैं, सोशल मीडिया पर पहले देखा जाता है - यादव था या ब्राह्मण? दलित था या ओबीसी? पर आतंकी सिर्फ एक बात देखता है- हिंदू है या नहीं?

आप समझिए- जब आतंकी पूछता है 'क्या नाम है तेरा?' वो आपकी जात नहीं पूछता, वो आपकी थाली नहीं पूछता, वो सीधा गोली मारता है।

आतंक की वापसी या कभी गया ही नहीं था?

सरकार ने वर्षों तक दावा किया—'अब कश्मीर बदल चुका है।' अनुच्छेद 370 को हटाने के बाद इसे 'नए भारत का मुकुट' बताया गया। लेकिन यह हमला यह साफ़ कर गया कि बदलाव सिर्फ आंकड़ों और भाषणों में हुआ है, ज़मीनी हकीकत अब भी वही है—जहाँ बारूद की बू, एके-47 की गूंज, और पाक प्रायोजित जिहाद का ज़हर हरियाली को लीलता रहता है।

टीआरएफः वही चेहरा, वही साजिश

The Resistance Front—ISI की डिजिटल शाखा, जिसने कश्मीर में एक नया 'वॉरफेयर मोड' लॉन्च किया है। ये न केवल युवाओं को कट्टरता की ओर धकेल रही है, बल्कि हमले की रणनीति को भी सोशल मीडिया से नियंत्रित करती है। पहलगाम का नरसंहार उसी डिजिटल जेहाद की भयावह परिणति थी। असीम मुनीर और ISI की साज़िशें अब किसी से छुपी नहीं हैं। लेकिन सवाल ये है—भारत की रणनीति क्या है? क्या हम अब भी 'कड़ी निंदा' के बयान भर जारी करेंगे? कब तक हमारी चुप्पी शहीदों के खून से रंगी जाएगी?

सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल

जब प्रधानमंत्री का दौरा प्रस्तावित था, तो खुफिया अलर्ट के बावजूद सुरक्षा ढीली क्यों थी? क्या प्रशासन ने फिर से सतर्कता की कीमत जानों से चुकाई? कश्मीर जैसे संवेदनशील क्षेत्र में सुरक्षा में चूक सिर्फ एक गलती नहीं—एक आपराधिक लापरवाही है। क्या अब समय नहीं आ गया कि पाकिस्तान के आतंकी ढांचे पर एक बार फिर निर्णायक कार्रवाई की जाए?

क्या कश्मीर को सिर्फ पर्यटन की दृष्टि से देखना हमारी भूल नहीं? और क्या अब भी यह मानना कि 'स्थानीय युवक भटके हुए हैं'- एक मानसिक प्रमाद नहीं? श्रद्धांजलि नहीं, उत्तर चाहिए

पहलगाम के शहीदों को न्याय तब मिलेगा जब भारत अपने शब्दों से नहीं, अपने संकल्प से जवाब देगा। जब TRF के हर गढ़ को नेस्तनाबूद किया जाएगा। जब हर जिहादी आइडियोलॉजी का डिजिटल समूल नाश होगा।

कश्मीर को अब इवेंट नहीं, इरादा चाहिए। पहलगाम को अब प्रार्थना नहीं, प्रतिकार चाहिए। और देश को अब मौन नहीं, संकल्प चाहिए।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में दिवंगत प्रदेश के कारोबारी दिनेश मिरानिया के अंतिम संस्कार में शामिल होकर पार्थिव शरीर को कंधा दिया। उन्होंने स्वर्गीय दिनेश मिरानिया के पार्थिव देह पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की और ईश्वर से मृतात्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

आत्मजागृति का चैत्र मास

नरेन्द्र पाण्डेय

चैत्र का महीना केवल कैलेंडर का एक पन्ना नहीं, बल्कि प्रकृति और मनुष्य के भीतर नवीनता का संदेश है। पेड़ों पर नई कोंपलें, खेतों में लहलहाती फसलें, और हवाओं में घुली ताजगी—यह सब हमें याद दिलाता है कि जीवन एक सतत नवीकरण की प्रक्रिया है। लेकिन सवाल यह है कि क्या हमारा मन, हमारी चेतना भी इस नवीकरण में शामिल है? चैत का अर्थ है चेतना, जागृति, होश में आना। यह वह समय है जब हमें अपने भीतर झाँककर पूछना चाहिए—क्या हम वाकई जाग रहे हैं?

नवरात्रि के नौ दिन इस चेतना को जगाने का अवसर हैं। ये केवल पूजा-पाठ, व्रत, या परंपराओं का निर्वहन नहीं, बल्कि आत्म-शोधन और आत्म-जागृति का समय है। हम मंदिरों में दीप जलाते हैं, माँ दुर्गा की आराधना करते हैं, लेकिन असली पूजा तब होती है जब हम अपने मन के अंधकार को मिटाते हैं। असली व्रत तब है जब हम अपनी इच्छाओं, क्रोध, और अहंकार को नियंत्रित करते हैं। नवरात्रि का अर्थ है—नई रातें, नया समय, नई ऊर्जा। यह वह समय है जब हम अपने भीतर की सीता को रावण के चंगुल से मुक्त कर, राम की उपस्थिति को अनुभव करते हैं।

॥ क्या हमारा मन, हमारी चेतना भी इस नवीकरण में शामिल है? चैत का अर्थ है चेतना, जागृति, होश में आना। यह वह समय है जब हमें अपने भीतर झाँककर पूछना चाहिए—क्या हम वाकई जाग रहे हैं? ॥

रामायण- चेतना का आंतरिक नक्शा

रामायण केवल एक कथा नहीं, बल्कि मानव मन और आत्मा की गहन यात्रा का प्रतीक है। यह वह दर्पण है जिसमें हम अपने भीतर की सारी अवस्थाएँ—राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, रावण—देख सकते हैं। प्रत्येक पात्र हमारे भीतर की एक अवस्था है, और प्रत्येक घटना हमारे मन का एक संघर्ष। आइए, इस चैत्र के पावन अवसर पर रामायण को एक नई दृष्टि से देखें-

राम-आत्मा की स्थिरता

राम आत्मा हैं—वह चेतना जो न कभी विचलित होती है, न कभी पराजित। चाहे राजमहल हो या वनवास, राम की शांति अटल रहती है। वह हमें सिखाते हैं कि आत्मा का स्वभाव है—निर्द्वंद्व, निर्लिप्त, और धर्मनिष्ठ। जब हम अपने भीतर राम को जगाते हैं, तो जीवन की हर परिस्थिति में शांति और संतुलन प्राप्त होता है। चैत का संदेश यही है—अपने भीतर के राम को पहचानो, क्योंकि वही तुम्हारी असली ताकत है।

सीता-अवचेतन मन

सीता हमारे अवचेतन मन की प्रतीक हैं—संवेदनशील, गहन, और प्रभावशाली। जब सीता सोने के मृग के मोह में पड़ती हैं, तो यह अवचेतन का माया में फंसना है। रावण द्वारा उनका हरण इस बात का संकेत है कि जब अहंकार हावी होता है, तो हमारी कोमल अनुभूतियाँ, हमारा आंतरिक सुख बंदी बन जाता है। नवरात्रि का समय है अपने अवचेतन को शुद्ध करने का, उसे माया और अहंकार से मुक्त करने का।

लक्ष्मण- विवेकशील बुद्धि

लक्ष्मण वह बुद्धि हैं जो धर्म और अधर्म का विवेक रखती हैं। उनकी उपस्थिति राम और सीता को सुरक्षित रखती है। लक्ष्मण रेखा केवल एक भौतिक सीमा नहीं, बल्कि चेतना की वह रेखा है जो हमें अनुशासित और सुरक्षित रखती है। जब हम अपनी बुद्धि को विवेक के साथ जोड़ते हैं, तो हमारा जीवन सही दिशा में चल पड़ता है।

हनुमान- प्राणशक्ति

हनुमान प्राणशक्ति के प्रतीक हैं—वह ऊर्जा जो संकट में संकल्प, साहस, और सेवा बनकर उभरती है। हनुमान का

संजीवनी लाना इस बात का प्रतीक है कि प्राणशक्ति ही वह शक्ति है जो निराशा और विफलता में नई चेतना फूंकती है। चैत के इस समय में ध्यान, प्राणायाम, और भक्ति के माध्यम से हम अपनी प्राणशक्ति को जगा सकते हैं।

रावण-अहंकार का पतन

रावण अहंकार का साकार रूप है। वह विद्वान है, शक्तिशाली है, पर आत्मा से कटा हुआ है। उसका दशानन होना दर्शाता है कि वह इंद्रियों और इच्छाओं में बंटा हुआ है। रावण का पतन हमें सिखाता है कि अहंकार कितना भी बलशाली हो, आत्मा के सामने वह टिक नहीं सकता। नवरात्रि का समय है अपने भीतर के रावण को पहचानने और उसे पराजित करने का।

भरत- चेतन मन का समर्पण

भरत चेतन मन हैं—जो बाह्य कार्यों में संलग्न है, पर हृदय से आत्मा के प्रति समर्पित है। उनका राम की खड़ाऊँ को सिंहासन पर रखना इस बात का प्रतीक है कि जब हम अपने चेतन मन को आत्मा के प्रति समर्पित करते हैं, तो जीवन में स्थिरता और शांति आती है।

नवरात्रि-आत्म-निर्माण का अवसर

नवरात्रि केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि आत्म-निर्माण का पर्व है। ये नौ दिन हमें अपने भीतर की शक्ति को पहचानने और उसे जागृत करने का अवसर देते हैं। यह समय है अपने बुरे विचारों, आदतों, और भावनाओं को त्यागने का। यह समय है अपनी इच्छाओं को थामने का, अपने मन को नियंत्रित करने का। जब हम अपने भीतर के अंधकार को मिटाते हैं, तभी असली नवमी आती है—नया जन्म, नई चेतना।

नवमी का अर्थ है राम का जन्म—हमारे भीतर उस आत्मा का जन्म जो शांति, सुख, और संतोष लाती है। जब राम हमारे भीतर जागते हैं, तो जीवन में रामराज्य की स्थापना होती है। यह वह अवस्था है जहाँ मन शुद्ध, विचार पवित्र, और जीवन संतुलित होता है।

चैत्र का संदेश-भीतर से नया हो जाओ

चैत्र का असली अर्थ है—जाग जाना, होश में आ जाना। यह समय है अपने जीवन की दिशा को समझने का, अपने भीतर के सवालों का जवाब ढूंढने का। हम हर समय कुछ न कुछ माँगते रहते हैं, लेकिन इन नौ दिनों में अगर हम कुछ न माँगें, केवल अपने भीतर झाँकें, तो यह एक क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है।

इस बार चैत्र को केवल कैलेंडर पर न मनाएँ, इसे अपने भीतर महसूस करें। नवरात्रि को केवल परंपरा न बनाएँ, इसे आत्मजागृति का पर्व बनाएँ। यह वादा करें कि इस बार न केवल दीपक जलाएँगे, बल्कि अपने भीतर भी उजाला लाएँगे। जैसा कि उपनिषद् कहते हैं—असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय—असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर।

रामायण को केवल पढ़ें नहीं,जीएँ भी

रामायण केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि हमारे भीतर की यात्रा का नक्शा है। यह हमें सिखाती है कि जीवन की हर चुनौती, हर युद्ध, हर विजय हमारे भीतर ही है। रामायण को पढ़ने से धर्म मिलता है, पर इसे जीने से मोक्ष संभव है। इस चैत में, इस नवरात्रि में, अपने भीतर के राम को जगाएँ, अपने रावण को पराजित करें, और अपने जीवन में रामराज्य की स्थापना करें।

अब फूफा बन गया हूं!

(व्यंग-काव्य) – नरेन्द्र पाण्डेय

कभी दामाद बनकर आया था ,
सासू माँ ने आरती उतारी थी,
बजे थे शंख और ढोल।
जीजा बना तो, गदगद थे सब लोग ।।
दामाद जी कहकर बुलाते थे ,
घी-शक्कर से नहलाते थे
हर चीज़ में 'जीजाजी' का स्वाद था,
जैसे मैं ही घर का आधा दाम था।।

साले भी थे खास थे ,
जीजाजी जीजाजी कहकर देते सम्मान थे ।
सभी लाइन में लगे रहते थे,
साली मुस्कान बिखेरती थी,
सासू माँ आँखों में सपना रखतीं,
ससुर जी चाय खुद पकड़ाते थे ।।

समय बीता, रोल बदला,
हम पिता बने, फिर मौसा हो गए ,
और अब— फूफा बन गया हूं!
स्थिति कुछ और हो गई है ,
'आ गए फूफा जी' सुनकर,
बच्चों की नींद भी खो गई।।

अब मेरे आने की सूचना नहीं दी जाती,
बस व्हाट्सएप पर लिख दिया जाता है,
फुफु को भेज दीजिए ,
समय मिले तो आप भी चले आइए ।

पहले जहाँ मिठाई के डिब्बे खुलते थे,
अब बच्चे पूछते हैं—'शुगर तो नहीं है? आपको'

पहले गद्दे तकिया सजते थे,
अब चटाई और खटिया मिलती है।
पहले चर्चाओं में रहता था—
अब कहता हूं तो बच्चे कहते हैं,
हां हां फूफा जी, आप भी क्या बातें करते हैं! ।

न कोई फोटो खिंचाता है,
न हमारी स्टेटस लगाता है।
एक कोने में बिठाकर
बच्चों से कहलवा देते हैं—
चलो फूफा जी के पास बैठो...।।

ससुराल का वो रुतबा गया,
अब तो बस रस्म निभानी है,
दामाद से फूफा बनने की,
यही है ज़िंदगानी है।।

बस अब समझ आ गया है —
रिश्ते भी प्रमोशन की तरह होते हैं,
दामाद होना मैनेजर था,
जीजा बना तो डायरेक्टर,
और अब फूफा बन गया हूं...
मतलब साफ है 'सेवानिवृत्त!' होगया हूँ ।।

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
तेंदूपत्ता संग्राहकों का जीवन खुशहाल
पहली बार ₹5,500 प्रति मानक बोरा की दर से संग्राहकों को पारिश्रमिक
12 लाख 50 हजार तेंदूपत्ता संग्राहकों का संवर रहा जीवन
सुशासन से समृद्धि की ओर
संवाद 13227/176
Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

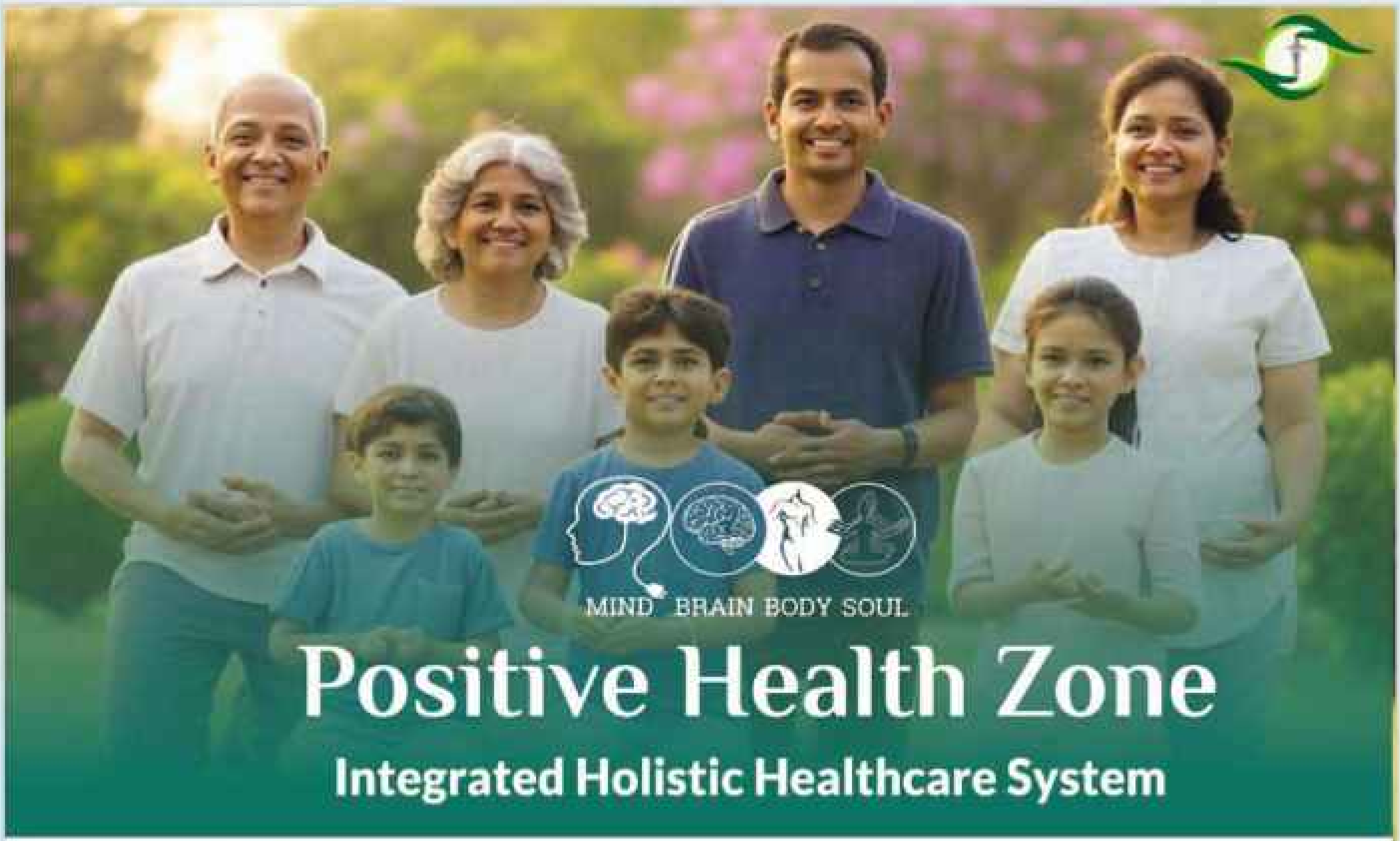

Positive Health Zone

Integrated Holistic Healthcare System

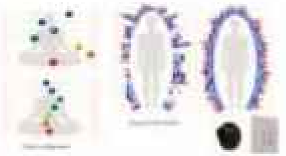

Quantum Analysis Of Aura Chakra Nadis

Personalised Customised Healing Meditation Yoga & Transformation

क्या आप चाहते हैं...?

- थकान, तनाव और बीमारियों के दायरे से निकलकर फिर से खुलकर जीना
- दवाओं पर निर्भरता नहीं, Wellness-आधारित जीवनशैली से भीतर तक संतुलन और शक्ति
- ऐसा जीवन, जहाँ शरीर, मन और आत्मा एक लय में बहते हों — सहज, शांत, संपूर्ण

Health Analysis With Digital Nadi Parikshan

Personalised Customised Diet Plan, Lifestyle Plan Detox Plan

OUR SERVICES

Body Detox By Kerala Panchkarma Ayurveda & Naturopathy

Energy Transformation with PNP

Mind Detox with NLP

Main Branch
A-41, Amrapali Society,near Ganga Diagnostics,Dhamtari Road, Pachpedi Naka, Raipur

9109185025,9109185028 www.phzinfo.com